चन्दामामा
अक्तूबर १९८०
Rs 1.50

अत्यन्त रोमांचक रहस्यों की!

लाकनेस राक्षस: कहा जाता है, स्काटलैंड की एक विशाल गहरी झील में अक्सर दिखायी दे जाता है। इसे सबसे पहले 1933 में देखा गया था और बताया जाता है कि यह 40 से 50 फीट तक लम्बा है।

भयंकर **हिममानव** (येती) वानर की तरह एक विशाल जीव है जिसे कहा जाता है कि हिमालय में रहता है। इसे कभी भी देखा नहीं गया, पर इसके विशालकाय पैरों के निशान देखे गये हैं।

उड़न तश्तरियां (यू.एफ.ओ.) और अन्य अन्तरिक्ष से आने वाले वायुयानों के बारे में, अपुष्ट खबरें और कुछ नहीं आकाश में घूमते पिण्ड हैं जिनके बारे में ठीक से जानकारी नहीं हो सकी है। 1948 से अब तक, अमेरिकी वायुसेनायें ऐसी लगभग 13,000 रिपोर्टों को रिकार्ड किया है।

प्राचीन साहित्य में **'एटलांटिस'** टापू का उल्लेख है। यह टापू उन्नत संस्कृति का केन्द्र था जो कि एक भूकम्प में समुद्र में विलीन हो गया। इसकी सही स्थिति आज तक सिद्ध नहीं की जा सकी, पर यह स्केंडेनेविया, अमेरिका या कनेरी टापू के पास कहीं हो सकता है।

बरमूदा त्रिकोण उत्तरी एटलांटिक महासागर में कहीं पर है। 18 वीं शताब्दी के मध्य से लगभग 50 पानी के जहाज और 20 हवाई जहाज या तो पूरी तरह गायब हो गये या नष्ट हो गये हैं।

जीवन बीमा आपके भविष्य को सुरक्षित बनाने का सबसे विश्वसनीय व अचूक रास्ता है। इसके बारे में और जानकार हो जाइये।

भारतीय
जीवन बीमा निगम

अगली बार: दोनों खोज करते हैं मानव के महानतम कारनामों की।

daCunha-LIC-93 HIN

Save Rs. 12/- to 32/-

by NOW Subscribing to
CHANDAMAMA CLASSICS & COMICS

	Normal Rate	Concessional Rate
24 months (48 issues)	Rs. 96/-	Rs. 64/-
12 months (24 issues)	Rs. 48/-	Rs. 36/-

No extra Postage Charges

CHANDAMAMA CLASSICS & COMICS are a new vision in Comics. They form a new dimension with the world famous

WALT DISNEY'S

colourful creations and thoughtful themes.

HOW TO ORDER

Sending your subscriptions is very easy. Just fill up the coupon at the bottom, and mail it with Crossed Postal Orders worth Rs. 36/- or Rs. 64/- to the address below. You may also send a Money Order and mail the money order receipt and coupon to:

DOLTON AGENCIES
Chandamama Buildings
Vadapalani, Madras-600 026

Offer open till 14th NOVEMBER 1980 and only to Subscribers in India.

CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS

Mister/Miss ______________________ Amount Rs. __________

Address : ______________________________________

______________________________ PIN : [| | | | |]

Date of Birth : ______________ Signature : ______________

Send my copies for _____ months from the Issue Dated 20th OCT, 1980

HIN

बंदिश

(इस्टमन कलर)

निर्माता :

डी. रामा नायडू

दिग्दर्शक :

के. बापय्या

संगीत :

लक्ष्मीकांत प्यारेलाल

कॅमल

वॉटर कलर्स और पोस्टर कलर्स

मीना का जन्मदिन था. राजू के लिए यह खुशी का मौका था. नंदू, विनय, रेखा, अशोक सभी बच्चे शानदार तोहफे लाने वाले थे.

राजू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या दे. वह कोई खास चीज़ देना चाहता था, जो सबसे अलग नज़र आये.

उसने बहुत देर तक इस बारे में सोचा. अचानक उसके दिमाग में एक बात आई.

उसने सोचा– क्यों न एक अच्छा सा मुखौटा बना कर दिया जाए? जिसकी टोपी में हरी पट्टियाँ हों, गालों पर गुलाबी रंग और लाल-लाल होंठ.

उसने जल्दी-जल्दी में गत्ते का एक टुकड़ा लिया और ब्रश से उस पर तेज़ हाथ चलाये. फिर क्या था— मुखौटा तैयार हो गया. उसने उसे काटकर रख लिया.

मीना ने जब उस रंग-बिरंगे तोहफे को देखा, तो वह खुशी से नाच उठी. हर कोई राजू और उसके तोहफे की तारीफ़ कर रहा था. अगर राजू रंगने का काम कर सकता है तो तुम क्यों नहीं?

कॅम्लिन प्रायव्हेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई-४०० ०२१.

कैम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

VISION 791 HIN

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 15 (Hindi)

1st Prize: Om Prakash Sharma, Jamshedpur-4. *2nd Prize:* Pankaj Madhusudan Chitnis, Thane. *3rd Prize:* Rajkumar Bhatia, Delhi-52. *Consolation Prizes:* Partha Pratim Roya, Calcutta-700 025; B. Sita, Visakhapatnam-530 001; Jaginder Shandilay, Punjab; Gopal Mangilal, Indore; Gakul Ch. Bose, Ghansoli.

बच्चो!
बतायें एक बात हर्ष की बैंकमें खाता खोलने की उम्र है 10 वर्ष की

दस साल या दस साल से अधिक उम्र के
बच्चों के लिए हमारे पास है एक विशेष
उपहार–बच्चों का बचत खाता।
–यानी माइनर्स सेविंग्स एकाउंट–
जिसे बच्चे स्वयं चला सकते हैं।

माइनर्स सेविंग्स एकाउंट—
सिर्फ़ 5/- रुपये की रकम से खोला जा
सकता है। हर बच्चा इसे खोल सकता है
लेकिन स्वयं रुपये जमा करना और
निकालना चाहते हो तो
दस साल का होना ज़रूरी है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
(भारत सरकार उपक्रम)

हम जानते हैं यही समय है भविष्य बनाने का.

Sobhagya-BOB/SC/5 Hin

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस मास की बेताल कथा 'बकवास' में यह बताया गया है कि अंट-संट बकने का फल कैसे बुरा होता है! 'करनी का फल' कहानी से हमें यह विदित होता है कि जुआ खेलना, शराब पीना जैसी सामाजिक कुरीतियों से लाभ उठानेवाले आखिर कैसे अपमानित होते हैं।

अमर वाणी

उद्यमेन हि सिद्यंति कार्याणि न मनोरथैः,
न हि सिंहस्य सुप्तस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

[केवल कामनाओं के करने मात्र से कार्य सफल नहीं होते, उसके वास्ते प्रयत्न भी करने चाहिए; जैसे सोनेवाले सिंह के मुंह में मृग प्रवेश नहीं करते ।]

वर्ष : ३३ अक्तूबर १९८० अंक : २

एक प्रति : १-५० : : वार्षिक चन्दा : १८-००

सामवेदम श्रीनिवास अनंतरवि

प्रश्न : आप कृपया राकेट के निर्माण और उसकी कार्य-पद्धति समझाइये।

उत्तर : दीपावली के दिन हम जो आतिशबाजियाँ जलाते हैं, उनमें राकेट भी एक है। उसकी कार्य पद्धति को समझ लेना बड़ा आसान है। डांड चलाकर पानी को पीछे की ओर खदेड़ने पर नाव आगे बढ़ती है। दीपावली के राकेट के निछले भाग से "धुआँ" बड़ी तेजी के साथ नीचे की ओर आ जाता है। उस "धुएँ" की ताक़त की विपरीत शक्ति राकेट को ऊपर की ओर ढकेलती है। मगर हम जब तक उसमें आग भर नहीं देते, तब तक राकेट में कोई धुआ नहीं होता। उसमें सिर्फ़ बारूद ही होती है। उसके लगाने पर ही वह वायु रूप को प्राप्त होती है। घन पदार्थ के भीतर का ईंधन जब वायु रूप को प्राप्त होता है, तब वह सैकड़ों गुना ज्यादा होता है। इसके साथ राकेट के अन्दर ज्यादा दबाव पड़ जाता है और वह उसी वक्त वायु रूप को प्राप्त ईंधन को बाहर ढकेलता है।

जेट विमान की जेट इंजिन भी इसी सूत्र के अनुसार काम करती है, मगर असली राकेट और जेट के बीच थोड़ा अंतर है।

राकेट में इस्तेमाल किये जानेवाला ईंधन द्रव रूप या घन रूप में भी हो सकता है। ("रोहिणी" उपग्रह का श्रीहरिकोट से प्रयोग करते समय घन रूप ईंधन ही काम में लाया गया है।) अगर ये ईंधन शून्य आकाश में भी जलते हैं तो वायु में व्याप्त प्राण वायु पर निर्भर रहने से कोई फ़ायदा नहीं है, क्योंकि अंतरिक्ष में हवा नहीं होती। राकेट को चलाने के लिए साधारणतः दो प्रकार का ईंधन होता है। एक जलनेवाला और दूसरा जलानेवाला—याने प्राण वायु। साधारणतः प्राण वायु द्रव रूप में होती है। साधारण तापक्रम में प्राण वायु वायु रूप में होती है, इसलिए उसे द्रव रूप में लाने के लिए ठण्डा करना होता है। वायु रूप को प्राप्त ईंधन धक्के की मार से बाहर आने पर ही राकेट में तेज गति आ जाती है। ईंधन शक्ति के आधार पर अगर एक राकेट पर्याप्त नहीं हो, तो तीन-चार राकेट की मंजिलों का उपयोग करते हैं। 'रोहिणी' में चार राकेटों की मंजिलों का उपयोग हुआ है।

[८७]

राजा हंस, मोर राजा

उत्तर के कर्पूर द्वीप में पद्मकेलि नामक एक सरोवर था। उसमें हिरण्य गर्भ नामक एक राज हंस जल पक्षियों का राजा बना हुआ था। वह अपनी प्रजा बने पक्षियों की रक्षा करते हुए उनकी प्रशंसा पाया करता था।

वहाँ से पाँच सौ मील दक्षिण में विन्ध्याचल में चित्रवर्ण नामक एक मोर जमीन पर निवास करनेवाले पक्षियों का राजा बना हुआ था।

एक दिन दीर्घमुख नामक एक बगुला घूमते-घामते विन्ध्याचल में आ पहुँचा और अपने आहार की खोज करने लगा। उस वक़्त हज़ारों पक्षियों ने उसे देखा और पूछा—"तुम किस देश के निवासी हो? तुम्हारे राजा कौन हैं?"

"मैं कर्पूर द्वीप का निवासी हूँ। हमारे राजा देवता अंशवाले हिरण्य गर्भ हैं। समझो, हमारा देश भूलोक स्वर्ग है।" बगुले ने जवाब दिया। यह जवाब देकर वह चुप न रहा, घमण्ड में आकर बोला—"तुम लोग इस जंगलवाले प्रदेश को छोड़ हमारे कर्पूर द्वीप में आ जाओ।"

"तुम खाने की खोज में हमारे देश में आये हो। ऐसी हालत में तुम्हारा यह घमण्ड ठीक नहीं है।" हज़ारों पक्षियों ने बगुले को डांटा।

इस पर उनके बीच झगड़ा शुरू हो गया। तब हज़ारों पक्षियों ने पूछा—"यह बताओ, हिरण्य गर्भ को किसने राजा बनाया?"

इस पर बगुले ने पूछा—"तुम बताओ, चित्रवर्ण को किसने राजा बनाया?"

"चित्रवर्ण तो सारे जंबू द्वीप के राजा हैं। तुम्हारा कर्पूर द्वीप उसी का हिस्सा है।" हज़ारों पक्षियों ने एक स्वर में जवाब दिया।

"अगर सिर्फ़ बातों से ही राज्य जीत सकते हैं तो तुम लोगों का कहना सच है। हमारे हिरण्य गर्भ भी यह साबित कर सकते हैं कि वे ही सारे जंबू द्वीप के राजा हैं।" बगुले ने कहा।

"सो कैसे?" हज़ारों पक्षियों ने पूछा।

"लड़ाई करके!" बगुले ने जवाब दिया।

"लड़ाई तो हम भी कर सकते हैं। तुम्हारे राजा चाहे बड़े ही बलवान हो हम युक्ति के साथ उन्हें हरा सकते हैं।" हज़ारों पक्षियों ने कहा।

इसके बाद वे सारे पक्षी बगुले को चित्रवर्ण के पास ले गये। सारी बातें बताईं, इस पर दूत का काम करनेवाले तोते ने बताया कि कर्पूर द्वीप जंबू द्वीप का हिस्सा ही है। चित्रवर्ण ने भी यही कहा कि चूंकि वह सारे जंबू द्वीप का राजा है, इसलिए कर्पूर द्वीप का भी वही राजा है।

दीर्घमुख ने इसे नहीं माना। उसने तर्क किया कि उनका राजा हिरण्य गर्भ ही सारे जंबू द्वीप का राजा है।

चित्रवर्ण ने पूछा—"तुम अपनी बात को कैसे सत्य साबित कर सकते हो?"

"लड़ाई करके!" बगुले ने झट जवाब दिया। फिर थोड़ी देर चुप रहकर बोला—"आप लोग एक दूत को हमारे राजा के पास भेज दीजिए। अगर वे आप की अधीनता को स्वीकार न करे तो युद्ध की घोषणा करके उसका परिणाम देखिये।"

चित्रवर्ण का मंत्री दूर दर्शन नामक चील बड़ा ही विवेकवान था। उसने पूछा—"राजा हिरण्य गर्भ का मंत्री कौन है?" दीर्घमुख ने बताया—"सर्वज्ञ नामक चक्रवाक हमारे मंत्री हैं।" इस पर चील ने बताया कि चक्रवाक उसी देश

का है, इसलिए वह मंत्री पद के लिए सब प्रकार से योग्य है ।

अपने मंत्री चील के साथ परामर्श करके चित्रवर्ण ने तोते को दूत के रूप में हिरण्य गर्भ के पास भेजने का निश्चय किया । तोता भी दूत कार्य करने को मान गया, लेकिन वह दुष्ट दीर्घमुख के साथ कर्पूर द्वीप को जाने को तैयार न हुआ । बोला–"तुमने अपनी बातों तथा व्यवहार से भी लड़ाई का वातावरण पैदा किया । अगर तुम चातुरी के साथ बोलने की कला जानते तो हालत कुछ और होती, साथ ही तुम्हारा नाम भी हो जाता ।"

इसके बाद दीर्घमुख कर्पूर द्वीप को लौट गया और हिरण्य गर्भ को सारा वृत्तांत सुनाया । हिरण्य गर्भ जब अपने कमल फूल की गद्दी पर बैठकर दीर्घमुख के मुँह से सारा समाचार सुन रहा था, तब उसको घेरे उसके सारे मंत्री यहाँ तक सर्वज्ञ चक्रवाक के साथ, बैठे हुए थे ।

सारी बातें सुनकर हिरण्य गर्भ दीर्घमुख से बोला–"तुमने लड़ाई की धमकी देकर जल्दबाजी की; अपने देश की ताक़त का तुमने ख्याल न रखा ।"

"दीर्घमुख ने मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया है । अकारण ही कलह पैदा किया है ।" ये शब्द सर्वज्ञ ने हंसराजा से कहे, फिर राजा से एकांत में बोला–"इस तरह लड़ाई छेड़ने की प्रेरणा हमारे किसी सैनिक अधिकारी ने दी होगी ।"

"जो बात हो गई, सो हो गई! लेकिन यह बताओ, इस वक़्त हमारा कर्तव्य क्या है ?" हिरण्य गर्भ ने पूछा ।

सर्वज्ञ ने समझाया–"महाराज, हम जंबू द्वीप में दो भेदियों को भेज देंगे। एक वहाँ की हालत को समझने की कोशिश करेगा, दूसरा हमारे दूत के रूप में जाकर हमारा संदेशा पहुँचा देगा ।"

इसके बाद राजा ने दीर्घमुख और एक और बगुले को भेजकर उनके परिवारों को राज्य के अधीन में रखा ।

इस बीच खबर मिली कि जंबू द्वीप से तोता दूत बनकर आ गया है। इस पर यह आदेश जारी हुआ कि दूत के ठहरने का इंतजाम करके राजा का आदेश मिलने पर राज दरबार में उसे हाज़िर करे।

हिरण्य गर्भ ने उत्साह में आकर कहा– "तब तो लड़ाई निश्चित है न?"

सर्वज्ञ ने कहा–"राजन, आप यह सोचकर खुश न होइयेगा कि लड़ाई अनिवार्य है। जैसे दुश्मन के सामने आत्म-समर्पण करके देश को उसके हाथ सौंप देना भारी भूल है, वैसे ही जल्दबाजी में आकर लड़ाई के लिए तैयार हो जाना भी बड़ी गलती होगी। यदि मीठी बातें, भेंट-पुरस्कार, धमकी, राजकीय संबंधों का विच्छेद, ये सब जब कारगुजार न होंगे, तब लड़ाई के लिए हमें तैयार होना चाहिए। जिसे युद्ध के भीषण परिणामों का अनुभव नहीं होता, वह अपने को एक महान वीर मानता है। युद्ध का नाम सुनकर लोग बगलें बजाते हैं, मगर लड़ाई में अपने परिवार के लोगों के मरते देख पछताते हुए रोते हैं। प्रत्येक युद्ध का अंत शांति के साथ ही होता है। इसलिए शांति स्वाभाविक है। इसलिए मेरी राय में युद्ध के बदले शांति ही उत्तम है। लेकिन इस वक़्त लड़ाई अनिवार्य हो गई है, इस वजह से लड़ाई के लिए आवश्यक तैयारियाँ होनी हैं। हमें इस बात को भूलना नहीं चाहिए कि चित्रवर्ण बलवान है। जल पक्षियों से जमीन पर निवास करनेवाले पक्षी संख्या में ही नहीं, बल्कि ताक़त में भी कहीं आगे हैं। हमारी हालत इस वक़्त ऐसी है जैसे तिमिंगल जमीन पर हाथी के साथ लड़ते हो। जब बलवान से सामना हो जाता है, तब बुद्धिमान व्यक्ति कछुए की तरह पीछे हट जाता है, लेकिन मौक़ा मिलते ही बदला लेने की भावना रखनेवाले साँप की तरह हमला कर बैठता है। अब दूत को आराम करने दीजिए, इस बीच हम अपने क़िले को मजबूत बना लेंगे।"

[५]

[एकाक्षी मांत्रिक की आँख बचाकर सेनापति समरसेन अपने सैनिकों के साथ जंगल में थोड़ी दूर पहुँचा। वहाँ पर अपनी प्यास बुझाने के लिए दो सैनिक तालाब में उतर पड़े, उन्हें मगर मच्छ पानी के अन्दर खींच ले गये। थोड़ी दूर और जाने पर एक तालाब में स्नान करनेवाले चतुर्नेत्र नामक भयंकर मांत्रिक दिखाई दिया। बाद...]

तालाब के किनारे झाड़ियों के पीछे छिपे समरसेन तथा उसके सैनिकों को अब सरोवर में खड़ा एक व्यक्ति स्पष्ट दिखाई दिया। वह एक गुच्छेवाली टोपी धारण किये हुए था। उस टोपी के आगे नेत्र जैसे दो चिह्न थे। उनमें से आँखों को चौंधियानेवाली रोशनी बाहर फूट रही थी।

इस बीच समरसेन के सारे संदेह दूर हो गये। उसने भांप लिया कि वह व्यक्ति जरूर एकाक्षी मांत्रिक का जानी दुश्मन चतुर्नेत्र है। एक विशाल शरीर व पतले सिरवाला एक विचित्र जानवर जब उसे निगलने को आया तब वह जरा भी विचलित न हुआ, बल्कि हुँकार कर उठा—"क्या तुम चतुर्नेत्र को ही निगलने आये हो?" इस पर समरसेन ने सोचा कि वह एक महान शक्तिशाली मांत्रिक होगा।
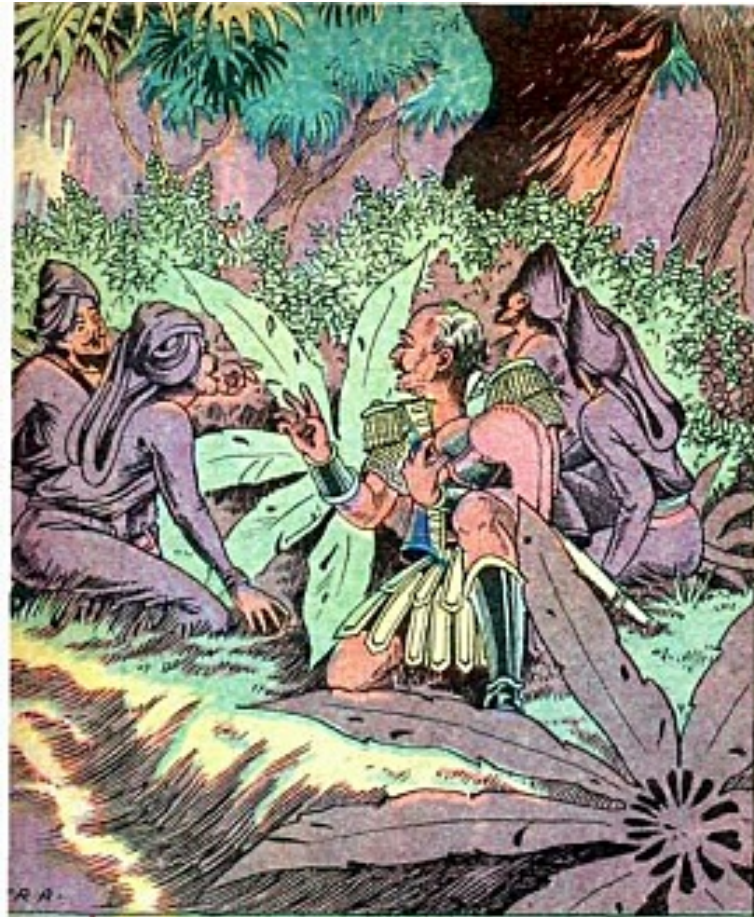
विचार करने लगा। थोड़ी देर बाद वह सैनिकों की ओर मुड़कर बोला–"मैं यह बात जानने के लिए तुम लोगों से पूछता हूँ कि तुम लोगों ने कहाँ तक हमारी इस विषम स्थिति को समझ लिया है। हमने इसके पूर्व जिस एकाक्षी मांत्रिक को देखा, वह और यह चतुर्नेत्र दोनों जानी दुश्मन हैं न?"

इस प्रश्न को सुनकर सैनिकों में से एक को छोड़ बाक़ी लोगों ने स्वीकृति सूचक अपने सिर हिलाये। पर जिस सैनिक के मन में संदेह था, उसने समरसेन से पूछा–"सेनापति जी, आप अन्यथा न सोचे तो मैं अपनी छोटी सी शंका का समाधान पाना चाहता हूँ।"

"वह कैसी शंका है? तुम्हीं नहीं, बाक़ी लोग भी अपने संदेहों का निवारण कर सकते हैं? ऐसी आफ़त के वक़्त एक ही के विचार के अनुसार चलने के बदले सम्मिलित रूप से विचार कर एक निर्णय पर पहुँचना कहीं उत्तम है।" समरसेन ने कहा।

"सेनापतिजी, क्या आप एकाक्षी मांत्रिक तथा चतुर्नेत्र के बीच की शत्रुता को हमारे अनुकूल बनाने की सोच रहे हैं? यदि यह बात सच है तो मेरी एक सलाह यह है कि यह तो सिंह और बाघ के बीच की

पर अब इस तालाब के तट पर से उस भयंकर मांत्रिक की आँखों से बचकर कैसे भागे? समरसेन इसी चिंता में पड़ गया। इतने में एक सैनिक बोल उठा–"सेनापति जी, क्या यह अचरज की बात नहीं है कि हम लोगों जैसे इसके दो आँखें नहीं, बल्कि चार आँखें हैं।"

समरसेन इसका जवाब देने जा रहा था, तब दूसरा सैनिक पहले सैनिक की ओर क्रोध भरी नजर दौड़ाकर बोला–"अबे, चार आँखें तो साफ़ दिखाई दे रही हैं, उसी का नाम चतुर्नेत्र है।"

समरसेन एक ओर अपने सैनिकों की बातें सुनते हुए अपने भावी कर्तव्य पर

दुश्मनी है, पर हमें इस बात को भूलना नहीं चाहिए कि वे दोनों खूँख्वार जानवर ही हैं; इनके जरिये हमें ख़तरा पैदा हो सकता है।" एक सैनिक ने कहा।

सैनिक की बातें सुनकर समरसेन फिर किसी विचार में डूब गया। वह थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला–"तुम्हारी बात सच है, लेकिन हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि ये दोनों महान मांत्रिक हैं। दुष्ट शक्तियों को इन लोगों ने अपने वश में रखा है।..." ये शब्द समरसेन कह ही रहा था, कि तभी सरोवर से चतुर्नेत्र किनारे पर आ गया।

चतुर्नेत्र की विशाल एवं भयंकर आकृति देख समरसेन और उसके सैनिक थर-थर कांप उठे। वे लोग भाग जाने की सोच रहे थे, तभी चतुर्नेत्र का भीषण स्वर उन्हें सुनाई दिया–"अरे पगले! तुम लोग मेरी आंखों में धूल झोंकना चाहते हो? नहीं, यह तुमसे नहीं बनेगा। ये पेड़-पौधे, टीले व पहाड़, कोई भी मेरी दृष्टि को रोक नहीं सकते। इस द्वीप के किस कोने में क्या-क्या हो रहा है, इस बात को मैं पल भर में बता सकता हूँ। अरे उलूक और नर वानर!"

यह पुकार सुनकर काला उल्लू और नर वानर पेड़ों की ओट में से तेजी के साथ

सैनिक चकित हो जहाँ के वहीं पर खड़े रह गये। चतुर्नेत्र धीरे-धीरे एक-एक क़दम आगे बढ़ाते हुए उनके समीप आ पहुँचा और मृदुल स्वर में पूछा—"बताओ, तुम लोग कौन हो? इस द्वीप में किस वास्ते आये हो?"

उस वक़्त चतुर्नेत्र के चेहरे पर किसी प्रकार की ईर्ष्या या कठोरता नाम मात्र के लिए भी न थी।

चतुर्नेत्र का व्यवहार देखने पर समरसेन और सैनिकों का डर जाता रहा। पर उनके सामने यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि क्या जवाब दे? समरसेन को लगा कि सच्ची बात बता देना ही उचित होगा। क्योंकि उन्हें अपनी वास्तविकता छिपाने के लिए कोई आवश्यकता न थी।

आ पहुँचे और उनके रास्ते को रोक खड़े हो गये। नर वानर अपने हाथ में एक डाल लिये हिलाने लगा। काला उल्लू हवा में उड़ते प्रचण्ड ध्वनि के साथ चिल्लाने लगा।

समरसेन को लगा कि वे लोग बड़ी बुरी आफ़त में फंस गये हैं। उनके हाथ के धनुष-बाण और भाले-बरछे किसी काम के नहीं हैं, इसलिए अपने अनुचरों के भय को दूर करने के ख्याल से बोला—"जब देवी की कृपा हम पर है, तब हमें किसी प्रकार के ख़तरे का डर नहीं है। कुंडलिनी देवी ही हमारी रक्षा करेंगी।"

"हम कुंडलिनी द्वीप के निवासी हैं। समुद्री यात्रा करते तूफ़ान में फंसकर यहाँ पर आ पहुँचे।" समरसेन ने जवाब दिया।

इस पर चतुर्नेत्र ने मुस्कुराकर कहा—"तुम्हारी बातों में सचाई ज़रूर है, मगर तुमने यह बात नहीं बताई कि तुम्हें समुद्री यात्रा क्यों करनी पड़ी? है न?"

समरसेन ने सोचा कि वास्तविक बात छिपाने से कोई प्रयोजन नहीं है, तब उसने सच्ची बात बता दी—"हमारे राजा का खजाना खाली हो गया था, उसे भरने के

ख़्याल से मैं थोड़े सैनिकों को साथ ले चल पड़ा हूँ।"

चतुर्नेत्र ने मुस्कुराकर कहा—"ओह! धन की खोज में तुम लोग अपने देश से निकल पड़े, बदक़िस्मती से तूफान में फंस गये और इस मांत्रिक द्वीप में पहुँच गये हो? अच्छी बात है! लेकिन याद रखो, यहाँ पर भी एक मांत्रिक है। वह भी धन का लोभ रखता है। ऐसी हालत में तुम दोनों धन-लोभियों का मिल जाना उचित होगा न?"

समरसेन की समझ में न आया कि इस सवाल का क्या जवाब दे? वह सकुचा ही रहा था कि इतने में उस सारे प्रदेश को प्रतिध्वनित करनेवाला भीकर स्वर सुनाई दिया। वह स्वर एकाक्षी मांत्रिक का था। वह उच्च स्वर में आदेश दे रहा था—"हे काल भुजंग! हे कपाल! जाओ, ढूँढ़ लो।"

यह चिल्लाहट सुनकर समरसेन के अनुचर कांप उठे। उन्हें हिम्मत बंधाते हुए उसने सुझाया—"अब डरने से कोई फ़ायदा नहीं है! देखो, तुम लोग जल्दी भागकर सामने दिखाई देनेवाली झाड़ियों में छिप जाओ।"

दूसरे ही क्षण सैनिक झाड़ियों की ओर दौड़ पड़े। इतने में एकाक्षी मांत्रिक वहाँ पर आ पहुँचा। काल सर्प और मानव का कपाल उसके बाजू में हिल रहे थे। चतुर्नेत्र को देखते ही एकाक्षी मांत्रिक भीषण हुंकार कर उठा—"अरे दुष्ट! तुम कितने दिन बाद दिखाई दिये?" इन शब्दों के साथ उसने झट से म्यान से तलवार निकाली।

पर चतुर्नेत्र एकटक एकाक्षी मांत्रिक की ओर नज़र दौड़ाते वहीं पर स्थिर खड़े विकट अट्टहास कर उठा—"अहो, एकाक्षी मांत्रिक महोदय! आइये, पधारिये! बहुत दिन के बाद आप के दर्शन हुए!"

एकाक्षी मांत्रिक कुछ कहने को था, तभी चतुर्नेत्र चिल्ला उठा—"नर वानर!

उल्लूक!" इस पर मिनटों में ही काला उल्लू और नर वानर वहाँ पर आ धमके। उन्हें देख एकाक्षी मांत्रिक चौंक पड़ा।

एकाक्षी मांत्रिक को भयभीत देख चतुर्नेत्र ने आदेश दिया–"उलूक, तुमने इस दुष्ट की दायीं आँख का स्वाद ले लिया है। अब बायीं आँख को भी फोड़कर देख तो लो कि उसका स्वाद कैसा है?"

इसके दूसरे ही क्षण काला उल्लू एकाक्षी मांत्रिक की ओर उड़ चला। एकाक्षी मांत्रिक घबराते हुए चिल्ला उठा–"कपाल! कपाल!" उसी वक़्त कपाल अपना पोपला मुँह खोलकर आगे बढ़ा और काले उल्लू पर हमला कर बैठा।

एकाक्षी मांत्रिक उत्साह में आकर खिलखिलाकर हँस पड़ा। इसे देख चतुर्नेत्र क्रुद्ध हो पुकार उठा–"नर वानर!" दूसरे ही क्षण नर वानर एकाक्षी मांत्रिक पर कूद पड़ा। एकाक्षी मांत्रिक डर के मारे चीख उठा–"अरे काल भुजंग!" फिर क्या था, काला सर्प फुफकार करते नर वानर के साथ जूझ पड़ा।

समरसेन और सैनिक झाड़ियों के पीछे छिपकर उस भयंकर युद्ध को देखने लगे। एक सैनिक मारे खुशी के चिल्ला उठा–"वाह, यह तो दो समान ताक़तवाले वीरों की लड़ाई है!"

"इसीलिए तो हम किसी भी मांत्रिक की पकड़ में न आकर बच गये।" समरसेन ने कहा।

एकाक्षी मांत्रिक के सेवकों तथा चतुर्नेत्र के भेदियों के बीच भीकर लड़ाई हुई। काले उल्लू को मानव कपाल अपने पोपले मुँह में दबाने की कोशिश करने लगा। नर वानर के शरीर को लपेटने की काल भुजंग अपनी पूरी ताक़त लगाकर कोशिश करता रहा। दूर पर खड़े हुए चतुर्नेत्र और एकाक्षी मांत्रिक एक दूसरे की ओर दांत पीसते नजर दौड़ाने लगे। दोनों का पता था कि उनके सेवकों की लड़ाई जल्दी खतम होनेवाली नहीं है।

इतने में अचानक चतुर्नेत्र हँस पड़ा और अपने सर पर की टोपी उठाकर चिल्लाया–"ऊँ, ह्रीं!" ये शब्द कहने की देर थी कि वह उसी वक़्त गायब हो गया।

इसके बाद एकाक्षी मांत्रिक गंभीर रूप से अपना चेहरा बनाकर दुतकार उठा–"अरे कमबख़्त कायर! तुम गायब हो गये? मैं भी देखता हूँ कि तुम इस तरह कितने समय तक मुझसे बचकर घूमा करोगे?"

एक-दो पल तक एकाक्षी मांत्रिक कुछ सोचता रहा, फिर समरसेन और उसके सैनिकों के वास्ते चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाई। पर झाड़ियों के पीछे छिपे वे लोग उसकी नज़र में न आये। उसने जोर से दांत किटकिटाये, तब चतुर्नेत्र के भेदियों के साथ लड़कर थके हुए काल भुजंग तथा कपाल को सांत्वना दी। तब चकाचौंध करनेवाली अपनी तलवार हिलाते पेड़ों की डालों की ओर देखा। उसके मन में अभी तक काले उल्लू का डर बना रहा। उस उल्लू ने इसके पहले एक बार अपनी तेज़ चोंच उसकी आँख पर मार दी थी। उसकी चिल्लाहट सुनते ही मांत्रिक के शरीर पर पसीना छूटने लगता है।

इसके बाद एकाक्षी मांत्रिक कपाल और काल भुजंग को साथ ले वहाँ से चल पड़ा। तब समरसेन और उसके अनुचर झाड़ियों के पीछे से बाहर आये।

समरसेन पुनः अपने सैनिकों को साथ ले पूर्वी तट पर स्थित अपने जहाजों तक पहुँचना चाहता था। इस विचार से उसने दो-चार क़दम आगे बढ़ाये ही थे कि पृथ्वी कांप उठी। इसके साथ चिट-पट की भयंकर ध्वनि सुनाई दी। उस ध्वनि को सुन समरसेन और उसके सैनिक चकित रह गये। उसी वक़्त उनके समीप के अग्नि पर्वत से शोले उठे और काला धुआ आसमान में फैलने लगा। सब लोग भयकंपित हो वहीं खड़े उन शोलों की ओर ताकने लगे।

(और है)

बकवास

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, आप का स्वभाव निश्चय ही अचंचल है। लेकिन ऐसा स्वभाव भी जब अतीत शक्तियों के प्रभाव का शिकार हो जाता है, तब पूर्ण रूप से बदल जाता है। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को वीर केसरी की कहानी सुनाता हूँ; श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा–"वीर केसरी एक साधारण व्यक्ति था। मगर उसका असाधारण गुण बकवास करना था। उसके सामने जो भी आता, उसे कुछ न कुछ कहे बिना वह रह नहीं पाता। इसलिए कोई भी उसे पसंद नहीं करता था, बल्कि उसे देखकर घृणा करता था।

वेताल कथाएं

प्रेक्षकों के बीच बैठे बीर केसरी ने तपाक से कह डाला–" तुम यह जानकर गप्प मारते हो कि इस गाँव में कोई पहलवान नहीं है, यही बात है न?"

पहलवान गुस्से में आ गया और बोला– "ये बातें कहनेवाला अगर मेरे सामने आकर कह देता तो मैं उसकी जान ले लेता।"

इस पर वीर केसरी रोष में आया, उसके सामने जाकर बोला–" क्या तुम यह समझते हो कि मैं तुम से डरता हूँ? मैंने जो बात कही, वह थोड़े ही झूठ है?"

पहलवान वीर केसरी पर टूट पड़ा और उसे पीटकर अधमरा छोड़ दिया।

इसके बाद बीर केसरी को उसके बहनोई ने समझाना चाहा–" देखते हो न तुम्हारी बकवास का कैसा बुरा फल मिला? अब भी सही, तुम अपनी जीभ पर नियंत्रण रखो।"

वीर केसरी तैश में आया और बोला– "मैं मार खा गया तो क्या हुआ? इस गाँव में उस पहलवान के सामने खड़े हो उसकी चुनौती का जवाब देने की हिम्मत रखनेवाला मुझे छोड़कर दूसरा कौन है?"

बीर केसरी के बहनोई ने सोचा कि उसकी इस जन्मजात प्रकृति को बदलना ब्रह्मा के लिए भी संभव नहीं है, यह

बीर केसरी की पत्नी बड़ी साधु प्रकृति की औरत थी। भले ही और लोग वीर केसरी की बकवास से बच जाते हो, मगर उसे बचना मुमकिन न था। उसका पति जो भी कह देता, वह चुपचाप सहन कर पाती थी। इसे देख उस औरत का भाई सांबशिव बड़ा ही खिन्न हो जाता था। उसने अपने बहनोई को उचित सबक़ सिखलाने के ख्याल से एक पहलवान को अपने गाँव बुला भेजा। उस पहलवान ने उस गाँव में अपने बल का प्रदर्शन किया और यह चुनौती दी–" मेरे साथ अगर कोई मल्ल युद्ध करना चाहता है तो वह मेरे सामने आ जाय!"

निश्चय कर उसने अपने प्रयत्न को तिलांजली दे दी ।

एक दिन वीर केसरी जब घर पर न था, तब एक यति उसके घर आया । उस वक़्त उसकी पत्नी ने यति का स्वागत करके कहा—"साधू महाराज! आप जैसे महानुभाव को आतिथ्य देने के लिए मेरा दिल छटपटा रहा है । मगर मेरे पति की डांट-फटकार के डर से मैं कुछ भी नहीं कर पाती हूँ ।"

"बेटी, तुम मुझे खाना खिलाओ, मैं तुम्हारे पति के मुँह पर ताला लगाऊँगा।" यति ने जवाब दिया । इस पर यति की बातों पर विश्वास करके उस गृहिणी ने यति को खाना परोसा ।

यति जब खाना खा रहा था, तब वीर केसरी घर लौट आया । यति को देख उसने झल्लाकर कहा—"पेट भरने के लिए तुमने दाढ़ी-मूँछें बढ़ा लीं? मेहनत करके जीने की आदत क्यों नहीं डालते?"

यति ने समझाया—"मैं मंत्रों का प्रभाव रखता हूँ। मेरी निंदा का फल बुरा होगा।"

"अरे गुदड़ी सन्यासी! क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे मंत्रों से डरता हूँ?" दांत पीसते हुए वीर केसरी ने जवाब दिया।

दूसरे ही क्षण यति के शरीर पर की गुदड़ियों की जगह राजसी पोशाकें दिखाई दीं, इसे देख वीर केसरी चकित रह गया ।

"सुनो, इस पल से तुम जिस किसी को भी गालियाँ दोगे, वे उनके लिए वरदान

बन जायेंगी।" यों कहकर यति उठकर वहाँ से चला गया।

उस दिन से लेकर बड़ी ही विचित्र घटनाएँ होने लगीं। वीर केसरी अगर किसी की बुराई सोच करके यह कह देता—"तुम्हारी फसल बरबाद हो जाये!" तो उस साल उस व्यक्ति की फसल दुगुनी हो जाती। इसी तरह किसी की बुराई करने के ख़्याल से यह कहता—"तुम्हारा घर गिर जाये!" तो उस मकान पर दूसरी मंजिल खड़ी हो जाती।

इस कारण गाँववालों में वीर केसरी के प्रति उपेक्षा का भाव बढ़ता गया। इन घटनाओं के कारण वीर केसरी के मन में अनायास ही कोई परिवर्तन होने लगा। उस दिन से वह अपने क्रोध पर नियंत्रण रखने लगा। किसी के प्रति अगर उसके मन में क्रोध पैदा हो जाता तो वह उन्हें आशीर्वाद देता, मगर उसके आशीर्वादों के विरुद्ध उन्हें नुक़सान भी नहीं होता था।

इसी प्रकार वीर केसरी ने अपने प्रिय व्यक्तियों के प्रति हित का ख्याल रखते हुए उन्हें गालियाँ सुनाकर, उन्हें लाभ पहुँचाना चाहा। पर इसके द्वारा उनका कोई लाभ भी नहीं हुआ।

फिर भी वह अपनी वाचालता के कारण किसी की निंदा करता तो उसके विपरीत उन्हें लाभ पहुँचता था। इस कारण धीरे-धीरे वीर केसरी की वाचालता जाती रही। अनावश्यक क्रोध आने पर भी उसने लोगों की निंदा करना बंद किया, सब के साथ अच्छा व्यवहार करने लगा। इस वजह से चाहे और लोगों का भले ही उपकार हुआ हो, या न हो, पर उसके इस परिवर्तन के कारण उसकी पत्नी को सबसे ज्यादा सुख पहुँचा।

बेताल ने यहाँ तक कहानी सुनाकर कहा—"राजन, यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि यति ने वीर केसरी में बड़ा परिवर्तन ला दिया है, वैसे यति ने कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया, उसने सिर्फ़ यही किया कि उसकी निंदा आशीर्वाद बन

जाये । इतने मात्र से ही बचपन से जो स्वभाव उसके भीतर समा गया था, वह वाचालता, क्रोध आदि कैसे दूर हो जाते हैं ? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दे तो आप का सिर फट जाएगा ।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया– "कोई भी व्यक्ति दूसरों को इसलिए गालियाँ देता है कि उसका फल दूसरा व्यक्ति भोगे और उसकी गाली या निंदा सच बन जाये । पुराण बताते हैं कि कुछ महात्माओं के वचन निश्चय ही सच बन जाते थे । पर साधारण मनुष्य वह शक्ति कभी खो बैठे थे । इस कारण कुछ लोगों में बकवास या बाचालता कहीं बढ़ गई थी । इस विचार से वे क्रोधी लोग और ज्यादा दूसरों की निंदा करते थे कि उसके वचन सत्य साबित न होंगे । ऐसे लोगों को आत्म-संतोष इसलिए होता है कि उनके दूषण से डरकर दूसरे लोग मौन रह जाते हैं । वीर केसरी की बाबत यति ने खासकर यही किया कि उसकी निंदा से लोग न डरे । जब से वीर केसरी की निंदा के विरुद्ध फल निकलने लगे, तब वह दूसरों की दृष्टि में गिर गया । ऐसी हालत में वह दूसरों की दृष्टि में महान बनने के ख्याल से जिनकी मदद करना चाहता था, उनकी वह निंदा करने लगा । वह जिनका अहित करना चाहता था, उन्हें आर्शावीद देने लगा । परंतु उसकी यह चाल चली नहीं । क्योंकि उसकी निंदा के आशीर्वाद बनने का कारण यति की महिमा है । उसे अपनी महिमा बताने के लिए वीर केसरी ने अपने प्रिय व्यक्तियों की निंदा की और शत्रुओं को आशीर्वाद दिया । इस तरह वह सर्वत्र अपमानित ही हुआ । उसकी वाचालता बेकार साबित हुई, सबसे वह दूर हुआ । इसके बाद उसके साधारण मनुष्य बनने में विशेष कारण की कोई ज़रूरत न रही ।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा ।

(कल्पित)

जिम्मेदार कौन ?

एक गाँव में अचानक पानी का अकाल पड़ गया। राजा के पास यह प्रार्थना-पत्र पहुँचा कि गाँव के तालाब को और गहरा बनाकर पानी का प्रबंध करने की कृपा करे।

तालाब को गहरा बनाने का आदेश राजा ने जारी किया। मंत्री महोदय ने राजप्रतिनिधि के पास इस आशय की ताकीद भेज दी। राजप्रतिनिधि ने कृषि विभाग को आदेश दिया। अंत में राजा का यह आदेश गाँव के अधिकारी के पास पहुँचा।

जल्द ही तालाब को गहरा बनाने का काम पूरा हो गया। तालाब की मरम्मत का निरीक्षण करने राजा खुद उस गाँव में पहुँचे। लौटकर राजा ने मंत्री से पूछा— "तालाब की मरम्मत के काम में बड़ी त्रुटियाँ हो गई हैं, इसके जिम्मेदार कौन हैं ?"

मंत्री घबरा गया। उसने राजप्रतिनिधि से इसकी कैफ़ियत मांगी। राजप्रतिनिधि ने अपनी गलती कृषि विभाग पर मढ़ दी। सब ने यही कहा कि दोष उनका नहीं है। आख़िर सबने मिलकर सारा दोष गाँव के अधिकारी के सर पर मढ़ दिया।

राजा ने गाँव के अधिकारी को बुलवाकर उसका बड़ा सत्कार किया और कहा— "मंत्री से लेकर कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता कि तालाब का काम कैसे हुआ ? पर अगर काम अच्छा बन गया तो सब कोई उसका यश लूटने आगे आ जाते हैं, गलती हो जाने पर सब कोई उसका दोष दूसरों पर मढ़ देते हैं।"

लाभ-नुक़सान
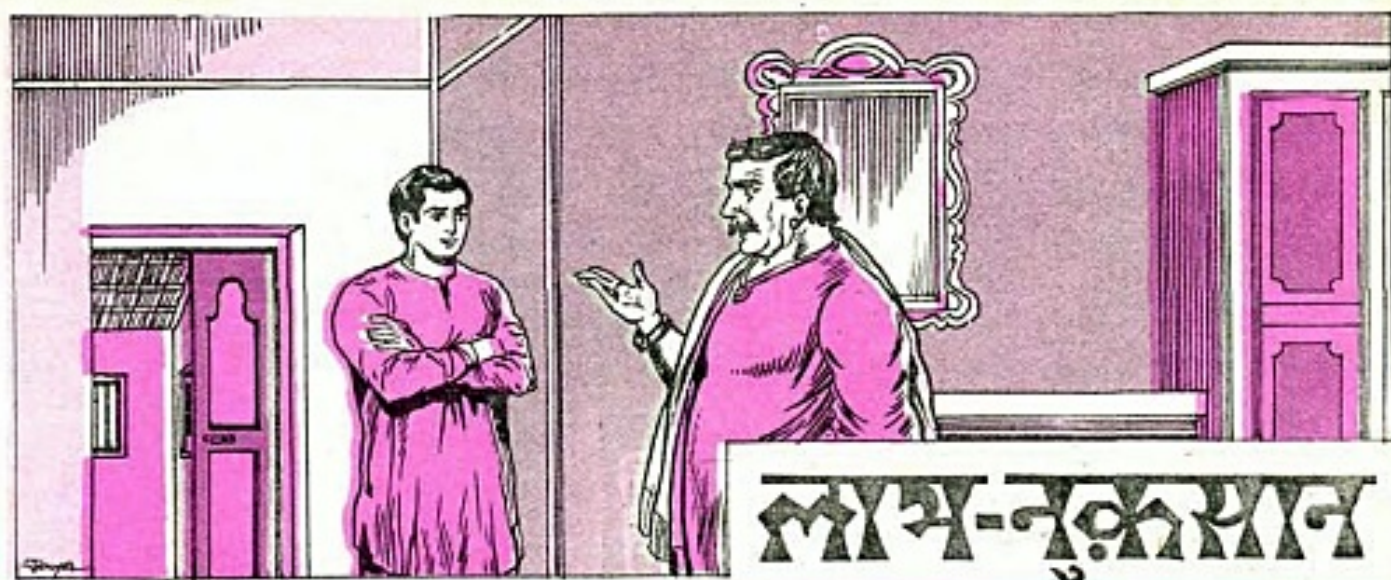
रामनाथ गाँव का सबसे बड़ा मातबर किसान है। उसका इकलौता बेटा सोमनाथ शहर में ऊँची शिक्षा प्राप्त कर गाँव में लौट आया। रामनाथ ने सोचा कि खेतीबाड़ी की जिम्मेदारी अपने बेटे को सौंप कर आराम कर ले। लेकिन सोमनाथ के मन में खेतीबाड़ी संभालने की इच्छा बिलकुल न थी। वह बोला–"पिताजी, खेतीबाड़ी तो ज्यादा फ़ायदेमंद नहीं है। मैं नहीं समझता कि उसके द्वारा हमारी मेहनत का सही फल मिलेगा। अधिक वर्षा और अकाल के कारण हमारी सारी मेहनत मिट्टी में मिल सकती है।"

अपने बेटे की बातों पर आश्चर्य में आकर रामनाथ ने पूछा–"तब तो तुम क्या करने का विचार रखते हो?"

सोमनाथ उसी गाँव के एक बड़े व्यापारी से मिला जो लाखों का व्यापार करता था, पूछा–"महाशय, किस प्रकार का व्यापार ज्यादा फ़ायदेमंद होगा?"

व्यापारी ने गहरी सांस लेकर उत्तर दिया–"बेटा! व्यापार में लाभ ही कहाँ मिलता है? तुम जान-बूझकर इस दल दल में क्यों फँसना चाहते हो? इसके पहले व्यापार में जो लाभ मिलते थे, सो आजकल नहीं मिलते! व्यापारियों की तादाद काफ़ी बढ़ गई है। इसमें होड़ लग गई है। व्यापारी को कोई सुख नहीं मिलता, शांति तो बिलकुल नहीं मिलती!"

इसके बाद सोमनाथ के मन में व्यापार के प्रति विमुखता पैदा हुई। वह सीधे शहर में चला गया। वहाँ के एक प्रमुख राजकर्मचारी से मिला। अपनी सारी हालत उसे बताई और पूछा कि उसे भी राजदरबार में कोई नौकरी दिलाने की कृपा करें।

रामकृपालु सिंह

राजकर्मचारी ने समझाया–"भाई साहब, राजदरबार में नौकरी करने का मतलब तलवार की धार पर चलने के बराबर है! राजा हम पर नाराज़ हो जाय या उनका अनुग्रह भी हमें प्राप्त हो, दोनों तरफ़ से खतरा ही खतरा है। तुम्हें अपना आत्म-सम्मान खोकर नौकरी करनी पड़ेगी। तुम तो बुद्धिमान लगते हो, तिस पर जमीन-जायदाद रखते हो। तुम अपनी यह बुद्धिमत्ता खेतीबाड़ी में प्रदर्शित करोगे तो आराम से अपनी ज़िंदगी बिता सकते हो और साथ ही दस लोगों को खिला-पिला सकते हो। नौकरी से न पेट भरता है और न इससे मानसिक संतोष ही प्राप्त होता है। तिस पर भी राजदरबार में नौकरी पाना मामूली बात नहीं है।"

राजकर्मचारी की बातें उसे सच्ची मालूम हुईं; वह चुपचाप घर लौट आया।

अपने बेटे को उदास देख रामनाथ ने कारण पूछा; सोमनाथ के मुंह से सारा वृत्तांत सुनकर रामनाथ ने समझाया–"बेटे, तुमने सोचा कि केवल खेतीबाड़ी में ही लाभ-नुक़सान होते हैं। यह दोष तुम्हारा नहीं है। तुम्हारा तो सिर्फ़ खेतीबाड़ी के बारे में ही थोड़ा-बहुत अनुभव है। कहा जाता है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं। वास्तव में बात यह है कि जहाँ लाभ होता है, वहाँ पर नुक़सान भी होता है। इसी तरह जहाँ सुख होता है, वहाँ थोड़ा-बहुत दुख भी होता है। पूर्ण सुख के साथ सिर्फ़ लाभ ही पहुँचानेवाला काम कहीं नहीं होता। मानव-जीवन में क़दम-क़दम पर सुख-दुख और लाभ-नुक़सान हुआ करते हैं, सच्ची बात तो यह है कि मानव के मन में लगन और आत्मविश्वास होना चाहिए। इनके होने से जीवन में जहाँ भी सुख-दुख और लाभ-नुकसान हों तो उनका सामना करके साहस पूर्वक उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।"

अपने पिता की बातें सुनने पर सोमनाथ का मन बदल गया। उसने खेतीबाड़ी करते उसी में सच्चा सुख प्राप्त किया।
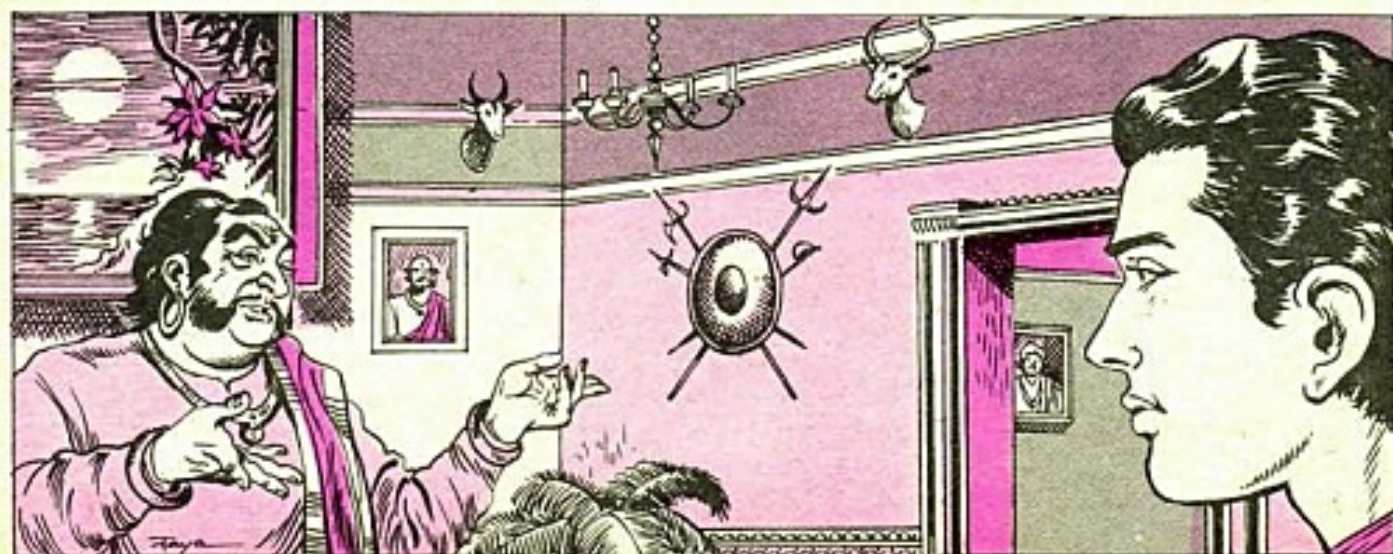
ज्ञानोदय

केशव के पिता ने अपनी सारी जायदाद बेचकर उसे ऊँची शिक्षा दिलाई और राजदरबार में उसे ऊँचा पद पाने का कारण बना। केशव ने ऊँचा पद पाने के साथ एक सभ्य परिवार की कन्या के साथ शादी की। इसके बाद उसके व्यवहार में बड़ा परिवर्तन आया, वह अपने माँ-बाप के प्रति लापरवाही दिखाने लगा।

थोड़े समय बाद केशव के एक लड़का पैदा हुआ। जब वह बड़ा होने लगा, तब केशव की पत्नी ने उसे समझाया कि लड़के को भी राजदरबार में कोई छोटी-मोटी नौकरी दिला दे।

पर केशव ने समझाया—"अभी से बेटे को नौकरी करने की क्या ज़रूरत है? उसे ऊँची शिक्षा पाने दो।"

"वह ऊँची शिक्षा पायेगा तो हमारी देख-भाल थोड़े ही करेगा? बड़ी नौकरी पाकर ऊँचे घराने की लड़की के साथ शादी करने पर वह हमारी परवाह नहीं करेगा।" पत्नी ने समझाया।

तब जाकर केशव के मन में ज्ञानोदय हुआ। दूसरे ही क्षण वह अपने बूढ़े माँ-बाप को अपने घर ले आया और ज़िंदगी भर बड़ी भक्ति के साथ उनकी देखभाल करने लगा।

ईमानदारी का मूल्य

रामलाल की दूकान में गणपति एक गुमाश्ता था। उसे जो तनख्वाह मिलती थी, उससे उसका पारिवारिक खर्च चल जाता था। गणपति ईमानदार था, इस कारण उसके परिवार के सभी लोग ईमानदार थे।

गणपति की बेटी शादी के योग्य हो चुकी थी। शादी के खर्च के लिए कम से कम उसे एक हज़ार रुपये की ज़रूरत थी। गणपति ने अपनी दूकान के मालिक से एक हज़ार रुपये क़र्ज़ मांगा। मालिक ने कोई बहाना बताकर इतनी रक़म कर्ज देने से साफ़ इनकार किया।

एक दिन ताराचंद नामक एक प्रसिद्ध महाजन हीरों का हार ख़रीदने के लिए रामलाल की गहनों की दूकान में आया। कर्मचारियों के खाने का वक़्त था वह। गणपति हिसाब-किताब पूरा करके दूकान बंद करने जा रहा था, तभी ताराचन्द आ पहुँचा। ताराचन्द ने हार ख़रीदे, उन पर अपना नाम खुदवाकर मूल्य चुकाया और हार लेकर चल पड़ा।

गणपति दूकान बंद करने के लिए ज्यों ही उठा, त्यों ही उसे फ़र्श पर एक छोटी-सी थैली दिखाई दी। उसे खोलकर देखा, उसमें ताराचन्द के द्वारा ख़रीदे गये हार थे। उन्हें देखते ही गणपति को अपनी बेटी की शादी की बात याद हो आई। दूसरे ही क्षण उसके मन में दुर्बुद्धि पैदा हुई। उन हारों को बेचने पर बेटी की शादी का खर्च निकल आएगा।

आज तक गणपति ने ईमानदारी की ज़िंदगी बिताई थी। अब वह सहसा अपनी ईमानदारी को किसी भी मूल्य पर बेचना नहीं चाहता था। मगर ज़रूरत और अनुकूल मौक़े ने उसकी ईमानदारी पर

विश्वनाथ पाठक

पानी फेर दिया। वह उन हारों को लेकर दूसरी गली में पहुँचा। गणपति का उद्देश्य था कि वे हार सुनार कामता प्रसाद के हाथ बेचकर रुपये ले। क्योंकि कामता प्रसाद चोरी का माल ख़रीदनेवाला है।

उस गली में लोगों की भारी भीड़ थी। भीड़ को खदेड़ते गणपति कामता के घर पहुँचा, पर देखता क्या है, उसे जो थैली मिली थी, वह गायब थी। गणपति का कलेजा कांप उठा। क्योंकि उस थैली में ताराचन्द के हारों के साथ उसकी तनख्वाह के रुपये भी थे। ज़िंदगी में पहली बार उसने यह गलती की, इसका ऐसा भारी दण्ड!

गणपति खाली हाथ फिर उसी रास्ते पर अपनी खोई हुई थैली को ढूंढते दूकान तक पहुँचा। दूकान खोलकर देखा, मगर वह थैली मिली नहीं।

इतने में दूकान के सामने ताराचन्द आ खड़ा हुआ। गणपति ने सोचा कि ताराचन्द इस विचार से आया होगा कि वह अपनी थैली दूकान में छोड़ गया है और उसे लेने वापस आया होगा, पर ताराचन्द ने हारोंवाली थैली निकालकर पूछा—"एक बार इन हारों को कसौटी पर कसकर बताइये कि ये नकली हैं या खरे हैं।"

गणपति की समझ में न आया कि वह जिस थैली को खो बैठा, वह ताराचन्द के हाथ फिर से कैसे आ गई? वह आश्चर्य में आ गया। उसने कसौटी पर कसकर बताया—"ये हार खरे सोने के हैं। मगर आप इन्हें फिर से क्यों लाये हैं?"

ताराचन्द ने कहा—"यह तो एक राम कहानी है। घर लौटते वक़्त मैंने देखा, मेरी थैली गायब है। मेरा दिल धड़क उठा। क्योंकि ये हार पूरे बीस हज़ार के थे। पागल की भांति सब जगह दरियाफ़्त करते आखिर घर पहुँचा। मेरे दर्वाजे पर एक लड़का बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक थैली थी। उसे देखते ही मेरी जान

में जान आ गई। मैंने उस लड़के को अपने हारों के निशान बताये। न मालूम वह किस माई का लाल है, बड़ा ही ईमानदार है। उसने वह थैली मुझे लौटा दी। मैंने उसे एक हज़ार रुपये का इनाम दिया। पर इसके बाद मेरे मन में शक हुआ कि यह जांच करवाकर देख तो ले कि ये हार असली हैं या नकली हैं, इसीलिए सीधे यहाँ पर चला आया।"

ताराचन्द हार लेकर चला गया, लेकिन हार जहाँ पहुँचने थे, पहुँच गये, यह खुशी की बात है, मगर दुख की बात यह है कि गणपति की तनख्वाह खो गई।

गणपति ने घर लौटकर सारा हाल अपनी पत्नी को सुनाया और बताया कि उसकी दुर्बुद्धि के दण्ड के रूप में वह अपनी तनख्वाह खो बैठा है। उसकी पत्नी ने गणपति को सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन महीने भर का खर्चा कैसे चले? तब उसने गिरवी रखकर रुपये लाने के वास्ते अपनी सोने की चूड़ियाँ निकालीं, तब उसका बड़ा बेटा रमापति आ पहुँचा।

रमापति बोला—"बापू, जानते हैं, आज क्या हुआ? आप वक़्त पर खाने के लिए घर न पहुँचे, तब मैं आप को बुला लाने दूकान पर पहुँचा। दूकान बंद थी, लेकिन उसकी सीढ़ियों पर एक छोटी-सी थैली पड़ी हुई थी। उसमें दो हीरे के हार थे। आप कहा करते हैं न कि नीति के माने जिसका माल उसे पहुँचा देना है। उन हारों पर ताराचंद का नाम खुदा हुआ था। मैं तुरंत उनके घर पहुँचा। थोड़ी देर बाद ताराचन्द आये। उन्होंने हारों के निशान बताकर वापस ले लिये और मुझे पुरस्कार के रूप में ये रुपये दिये।"

गणपति ने सोचा था कि उसकी दुर्बुद्धि ने उसे दण्ड दिया है, लेकिन उसके बेटे की ईमानदारी ने उसकी रक्षा की। इसके बाद ताराचन्द के द्वारा प्राप्त रुपयों से गणपति की बेटी की शादी का खर्च निकल आया।
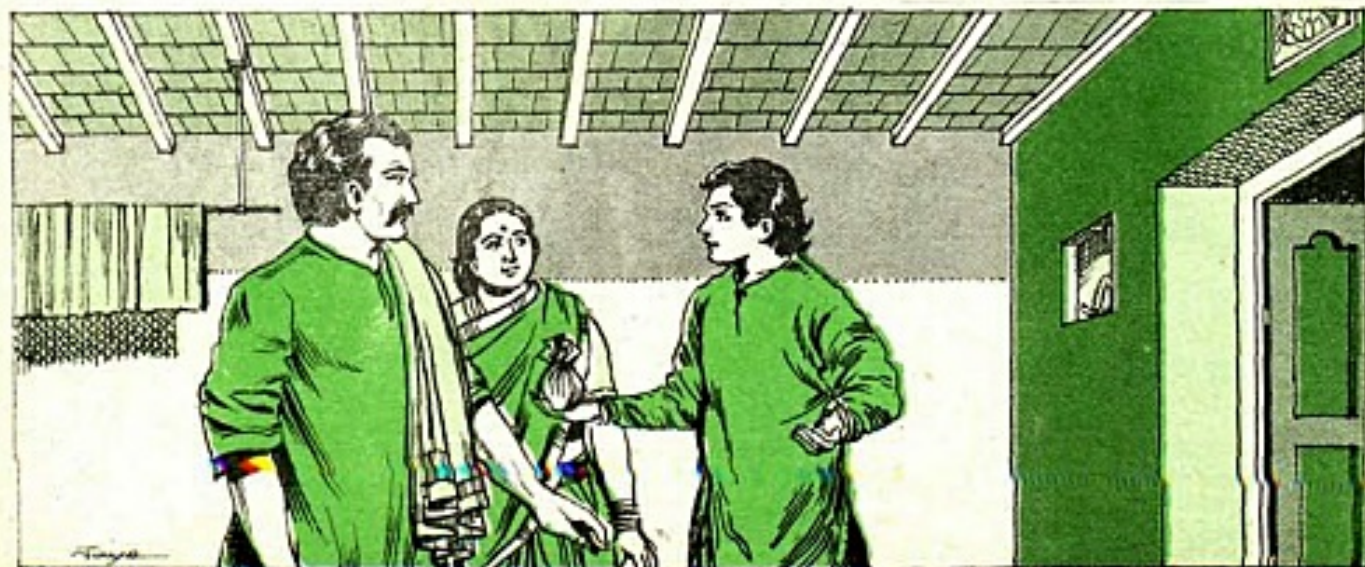
अनोखा फौव्वारा

प्राचीन काल में काशी राज्य पर जब राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे, उस समय बोधिसत्व का जन्म एक बणिक वंश में हुआ। बड़े होने पर बोधिसत्व पाँच सौ गाड़ियों पर अपना माल लादकर व्यापार किया करते थे।

एक बार बोधिसत्व का कारवाँ एक रेगिस्थान में पहुँचा। वह रेगिस्तान साठ योजन लंबा था। उसकी रेत बड़ी महीन थी। मुट्ठी में भरने पर रेत उंगलियों के बीच से खिसक जाती थी। वह प्रदेश रात के वक़्त ठण्डा होता था। मगर सूर्योदय के साथ धीरे-धीरे गरम होकर धक्-धक् करके जलनेवाले चूल्हे जैसे हो जाता था। दिन के वक़्त उस रेगिस्तान में पैदल चलना मुश्किल था। इसलिए यात्री लोग रेगिस्तान को पार करने तक अपने लिए आवश्यक चावल, दाल, तेल, लकड़ी, पानी वगैरह चीज़ें गाड़ियों पर लादकर रात के वक़्त ही यात्रा करते थे। समुद्री यात्री जैसे रात के समय नक्षत्रों की मदद से अपनी दिशा का पता लगा लेते थे, वैसे रेगिस्तान के यात्री भी करते थे। सवेरा होते-होते वे अपनी यात्रा बंद कर देते, गाड़ियों को वृत्ताकार में खड़ा करके बीच में मण्डप जैसा बनाते, उस पर चांदनी जैसे पर्दे बांधकर धूप के तेज होने के पहले ही रसोई बनाकर खा लेते और फिर संध्या तक छाया में आराम करते।

बोधिसत्व ने इसी तरह यात्रा करके लगभग रेगिस्तान को पार किया। अब सिर्फ़ एक योजन की यात्रा बच रही। उन्होंने सोचा कि उस रात को वे लोग रेगिस्तान को पार कर सकते हैं। यों विचार कर शाम के वक़्त रवाना होने के पहले अपने सेवकों के द्वारा जलावन तथा

जातक कथा

पानी फेंकवा दिया। इस तरह बोझ कम करने पर यात्रा तेजी के साथ चल सकती थी।

सब से आगे चलनेवाली गाड़ी में रास्ते का मार्ग दर्शक होता है। वह रात भर जागता रहता, नक्षत्रों की गति का परिशीलन करते आगे की गाड़ी को कहाँ किस तरफ़ चलना है, चिल्ला-चिल्लाकर मार्ग दर्शन किया करना। मगर इस बार उसे गहरी नींद आ रही थी, तिस पर थका-मांदा था, इस कारण वह सो गया। कोचवान की असावधानी से बैल नियंत्रण खोकर उसी रास्ते पर चल पड़े, जिस रास्ते से वे लोग चले आये थे।

सूर्योदय के समय वह नींद से जाग पड़ा, नक्षत्रों की गति देख गाड़ियों को उल्टे रास्ते पर चलते भांप गया और उन्हें लौटाने को कहा।

गाड़ियाँ तो मुड़ गईं। मगर जिस खतरे से वे लोग बचना चाहते थे, उसी-खतरे में वे लोग फंस गये। सवेरा होते ही उन लोगों ने देखा कि पिछले दिन की शाम को वे लोग जहाँ से निकले थे, वहीं पर पहुँच गये हैं, मगर वहाँ पर पानी न था।

फिर से सबने गाड़ियों को वृत्ताकार में खड़ा किया और सारे आदमी निराश हो गाड़ियों के नीचे लुढ़क पड़े।

सब लोगों की भांति अगर बोधिसत्व भी हिम्मत खो बैठते तो सब का मरना निश्चित था। इसलिए बोधिसत्व उस ठण्डी वेला में इधर-उधर टहलते रहे, पानी के सोते के वास्ते बड़ी सावधानी से खोज करने लगे। आखिर उन्होंने एक जगह दाभों का झुरमुट देखा। अगर उसके नीचे गहराई में ही सही, पानी न होता तो वहाँ पर दाभ न उगता। यों विचार कर उन्होंने कुदाल मंगवाकर एक युवक के द्वारा उस प्रदेश को खुदवाया। साठ हाथ गहराई तक खोदने पर फावड़े का पाल एक शिला से टकराया और खन्

खन् की आवाज़ सुनाई दी। तब सब लोग हताश हो गये। पर बोधिसत्व का गहरा विश्वास था कि उस शिला के नीचे ज़रूर पानी होगा। वे उस गड्ढे में उतर पड़े और शिला पर कान लगाकर सुना। शिला के नीचे पानी के प्रवाह की ध्वनि सुनाई दी।

इसके बाद बोधिसत्व गड्ढे से बाहर आये और बोले—"भाइयो, अब हम लोग हताश हो चुप बैठे रह जायेंगे तो हम सब का मर जाना निश्चित है। इसलिए एक को नीचे उतरकर उस शिला को फोड़ना होगा। उसके नीचे पानी है। उसके बाहर निकलने पर हम सब बच जायेंगे।"

बोधिसत्व के मन में जो गहरा विश्वास था, वह और लोगों के मन में न था। फिर भी उनका सुझाव पाकर एक युवक गड्ढे में उतर पड़ा और कुदाल से सारी ताक़त लगाकर शिला पर दे मारा।

आख़िर वह शिला टूट गई। उसके नीचे दबा हुआ जल एक ताड़ के पेड़ के प्रमाण में ऊपर उठा। इस पर सब की जान में जान आ गई। सब ने अपनी प्यास बुझाई, नहाया-धोया। जो पुरानी गाड़ियाँ, थीं, उनके पहियों को काटकर जलावन का काम लिया। रसोई बनाकर खाना खाया। बैलों को घास-पानी दिया। शाम तक आराम किया। रात के होते ही फिर से यात्रा चालू करने के पहले वहाँ पर एक ध्वज स्तम्भ गाड़ दिया, जिसका संकेत था कि वहाँ पर पानी है। फिर वे लोग सवेरा होने के पहले ही रेगिस्तान को पार कर अपने निर्णीत प्रदेश में पहुँचे।

वहाँ पर उनका माल तीन गुने ज़्यादा दर पर बिक गया। ख़र्च को काटकर न्यायपूर्ण लाभ बच रहा।

थोड़े दिन बाद बोधिसत्व अपने पूरे कारवाँ के साथ अपने नगर को लौट आये, व्यापार के द्वारा उन्होंने जो कुछ कमाया, उस धन से दान-धर्म करते वे सुख की ज़िंदगी बिताने लगे।

मौत की छाया में

एक दिन यशोधरा ने अपने पुत्र राहुल से कहा–"सुनो बेटा, तुम्हारे पिता के पास चार पेटी भरकर आभूषण थे, तुम उनके पुत्र हो, इसलिए उन आभूषणों पर तुम्हारा ही अधिकार है। तुम जाकर उनसे पूछ लो कि वे कहाँ पर हैं?" राहुल यह सोचकर खुश हुआ कि उसे बुद्ध के साथ बातचीत करने का मौक़ा मिला है।

राहुल ने बुद्ध के दर्शन करके पूछा–"पिताजी, आप अपनी संपत्ति मुझे दे दीजिए।" बुद्ध ने मुस्कुराकर कहा–"तुम मेरे वारिस हो, इसलिए मैं तुम्हें अपनी उत्तम संपत्ति–मेरे ज्ञान को–दे देता हूँ।" इन शब्दों के साथ उन्होंने अपने एक प्रधान शिष्य सारिपुत्त को आदेश दिया कि राहुल को सन्यास दे दे।

यह समाचार मिलने पर राजा शुद्धोदन बहुत दुखी हुए। वे बुद्ध के पास जाकर बोले–"प्रभु! आप ने राज्य का तिरस्कार किया, आनंद के द्वारा भी तिरस्कृत करवाया; अब आप का पुत्र भी राज्य से वंचित हो गया। मेरे लिए और कौन हैं?" इस पर बुद्ध ने यह नियम बनाया कि कोई भी युवक अपने माता-पिता की अनुमति के बिना सन्यास नहीं ले सकते।

श्रावस्ती में सुदत्त नामक एक धनी व्यापारी रहा करता था। उसने बुद्ध को वर्षाकाल में ठहरने के वास्ते खूबसूरत जेतवन देना चाहा। वह वन जेत नामक एक क्षत्रिय का था। जेत ने सुदत्त को बताया कि उस सारे वन में सोना बिछाकर उसे मूल्य के रूप में दे, तो वह उस वन को बेचने के लिए तैयार है।

सुदत्त ने अपनी सारी संपत्ति बेचकर सोने की चद्दर ख़रीदी, मगर वे परतें वन के आधे हिस्से में बिछाने लायक़ थीं, फिर भी जेत उसे देख मुग्ध हो उठा और बाक़ी हिस्से में उसने खुद सोने की चद्दर बिछाई, तब दोनों ने मिलकर बुद्ध का स्वागत किया।
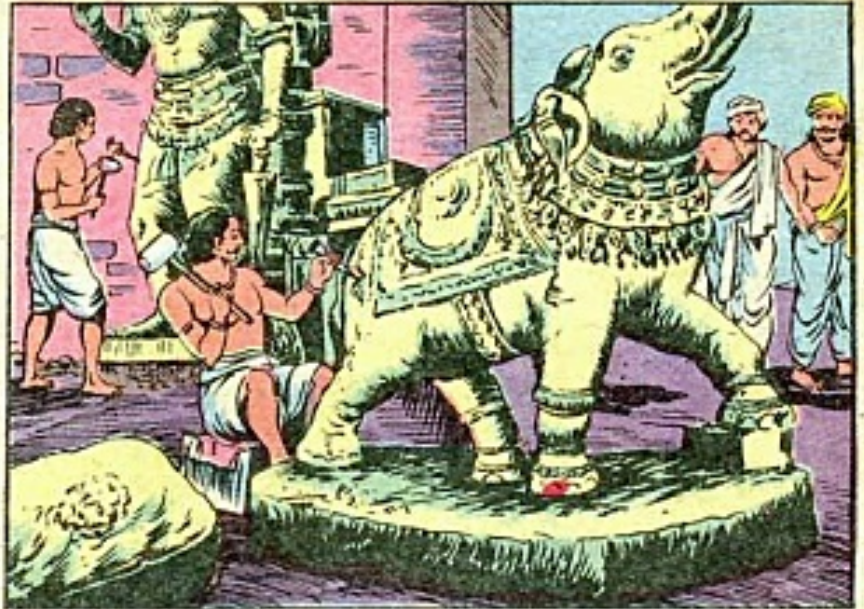
बुद्ध जब जेतवन में थे, तब गौतमी नामक एक कुलीन नारी अपने बेटे को खो बैठी। रिश्तेदारों ने कई तरह से उसे समझाया कि वह जल्दी अपने बेटे की अंत्येष्ठि क्रियाएँ करे, पर उसने यह कर्म-कांड नहीं किया, वह असहनीय दुख में डूब गई।

कुछ लोगों ने गौतमी का यह हाल देख उसे समझाया कि शायद महात्मा बुद्ध तुम्हारे बेटे को फिर से जिला दें। इस पर वह उसी वक्त बुद्ध के पास पहुँची। सारा हाल बताया। बुद्ध ने कहा–"बहन, तुम ऐसे घर से एक राई ले आओ, जिस घर में आज तक किसी की मौत न हुई हो, तब तुम्हारा बेटा जिंदा हो जाएगा।"

गौतमी ने सोचा कि वह जो राई ले जाएगी, उससे बुद्ध कोई अद्भुत कार्य करेंगे, वह घर-घर, द्वार-द्वार भटकती रही, लेकिन ऐसा घर उसे एक भी दिखाई नहीं दिया जिसमें मृत्यु ने कभी प्रवेश न किया हो! उस प्रदेश के सब से धनवान के घर में उस साल तीन लोगों की मौत हो चुकी थी।

आख़िर गौतमी यह सोचकर एक मशहूर वैद्य के घर पहुँची कि ऐसे नामी वैद्य के घर में मृत्यु कभी प्रवेश नहीं कर सकती। लेकिन उस घर में पहुँचने पर गौतमी को मालूम हुआ कि वैद्य के बेटे और बेटी की भी मौत हो गई है।

तब जाकर गौतमी धीरे-धीरे समझ गई कि बुद्ध वास्तव में उसे कैसा उपदेश देना चाहते हैं। इसके बाद वह अपने बेटे के शव को श्मशान में ले गई, उसे चिता पर रखकर बोली– "बेटे, जो लोग मर गये हैं, वे सब मुझ जैसी माताओं के बच्चे ही हैं।"

शाम तक गौतमी बुद्ध के पास लौट आई। बुद्ध ने उससे पूछा–"क्या तुम्हें राई मिल गई?" गौतमी ने जवाब दिया–"नहीं, भगवान! मगर मुझे आप का उपदेश मिल गया है।" उस वक्त वह जीवन के लक्ष्य को समझने की हालत में थी। इसके बाद बुद्ध ने उसे उपदेश दिया। गौतमी उनकी शिष्या बन गई।

बुद्ध जब वैशाली में थे, तब उन्हें यह ख़बर मिली कि उनके पिता मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं। इस पर बुद्ध ने कपिलवस्तु जाकर अपने पिता को आशीर्वाद दिया। इसके बाद वे जनता में अपने धर्म का प्रचार करने चल पड़े।

चोर चोर मौसेरे भाई

एक दिन रात को गरीबसिंह नामक एक डाकू राजा के खजांची नागवर्मा के घर में चोरी करने गया। उस वक्त नागवर्मा अपनी पत्नी से कह रहा था–"आज मैं राजा की आँख बचाकर सिर्फ़ एक सौ मुहरे ही ला पाया। एक सौ और मुहरे लाने से दस हज़ार पूरे हो जायेंगे।"

ये बातें सुन गरीबसिंह चुपचाप वापस मुड़ने को हुआ, तभी नागवर्मा ने उसे देख लिया। इस पर वह गरीबसिंह को पकड़ने को लपका। तब गरीबसिंह ने कहा–"मैंने तुम्हारे घर से कोई भी चीज़ चुराई नहीं! एक भिखारी दूसरे भिखारी से याचना नहीं करता! इसी तरह एक डाकू दूसरे डाकू को नहीं लूटता!"

इस पर नागवर्मा झल्लाकर बोला–"अबे, जानते हो, मैं कौन हूँ? मैं राजा का खजांची हूँ! क्या तुम मुझे डाकू बताते हो?"

गरीबसिंह ने मुस्कुराकर कहा–"मैंने तुम्हारी सारी बातें सुन ली हैं। तुम राजा की आँखों में धूल झोंककर जनता की संपत्ति लूटनेवाले हो, ऐसी हालत में तुम डाकू नहीं हो तो क्या हो? तुम सचाई को स्वीकार न कर सकनेवाले मुझसे भी गये बीते हो!"

नागवर्मा ने दूसरे दिन सब की आँख बचाकर सारी संपत्ति ख़जाने में जमा कर दी।

करनी का फल

शिवसागर नामक गाँव में दुर्गा सहाय नामक एक लोभी धनवान रहा करता था। वह खासकर जुआखोरों को क़र्ज दिया करता था। वे लोग जुए में ज़्यादा धन जीत जाने की आशा से अपनी जमीन, जायदाद गिरवी रखकर क़र्ज लेते हैं। अगर जुए में हार गये और क़र्ज चुका न पाये तो क़र्ज की रक़म से दस गुने ज़्यादा संपत्ति क़र्जदार के हाथ चली जाती है। ऐसा न होकर यदि जुआखोर जुए में जीत जाते हैं तो क़र्ज चुकाते वक़्त खुले दिल से ज़्यादा से ज़्यादा ब्याज दे देते हैं। इस वजह से जुआखोरों को कर्ज देनेवाले कभी नुक़सान नहीं उठाते; लेकिन साधारण महाजनों को भले ही जब-तब नुक़सान उठाना पड़ता हो।

दुर्गा सहाय ने जुआखोरों को ऋण देकर अपार धन कमाया। ऐसा व्यापार करके लोगों के घर डुबाने से मना करते हुए गाँव के बुजुर्गों तथा पड़ोसी गाँव गंगापुर के मुखिये रामचरणसिंह ने अनेक प्रकार से समझाया, पर दुर्गा सहाय ने किसी की बात न मानी।

कुछ ही दिनों में गाँव के नामी जुआखोर चल बसे, साथ ही जुआ पर प्रतिबंध लगाते हुए सरकार ने क़ानून भी बनाया। इस पर गाँव के सभी लोग बहुत खुश हुए, लेकिन दुर्गा सहाय अपनी भारी आमदनी पर पानी फिरते देख बड़ा दुखी हुआ।

एक दिन रात के वक़्त दुर्गा सहाय के घर पड़ोसी गाँव का रामचरणसिंह आ पहुँचा, बोला कि वह भी जुए की बुरी लत का शिकार हो गया है। इसलिए सौ रुपये क़र्ज में दे दे। शिवसागर के गाँव में भी रामचरणसिंह की जमीन-

धनीराम तिवारी

जायदाद थीं। उन्हें हड़पने का ख्याल करके लोभ में पड़कर दुर्गा सहाय ने रामचरण से कागज़ लिखवाकर सौ रुपये क़र्ज़ दिया।

साथ ही इस विचार से वह रामचरण के पीछे चल पड़ा कि शिवसागर में फिर से जुआ शुरू हो जाय तो वह अपने पुराने पेशे को चालू कर सकता है, इसलिए जुआखोरों को तो देख आवे। रामचरण गाँव के बाहर पहुँचकर एक उजड़े मकान में घुस गया। दुर्गा सहाय ने खिड़की में से झांककर भीतर देखा और आश्चर्य चकित रह गया।

उस मकान के अन्दर जुआ जोरों से चल रहा था। वे सब वे ही लोग थे जो उसके यहाँ क़र्ज लेकर कालक्रम में मर गये थे। दुर्गा सहाय ने मन में सोचा कि बेचारा रामचरण यह बात जाने बिना भूतों के साथ खेल रहा है, उसकी जीत नामुमकिन है।

दुर्गा सहाय की कल्पना के अनुसार रामचरण दूसरे दिन रात को फिर आ पहुँचा, कागज़ लिखकर थोड़े रुपये और ले गया। इसके बाद वह रोज रात को दुर्गा सहाय के पास आ जाता, कागज़ लिखकर सौ-दो सौ रुपये ले जाता। यह क्रम बराबर चलता रहा। भूत तो रामचरण को लूट रहे थे। वह भी रामचरण को क़र्ज देकर लूट रहा है, यों विचार कर दुर्गा सहाय बड़ा ख़ुश हो जाता।

बीस दिन गुजर गये, तब दुर्गा सहाय ने रामचरण से कहा–"महाशय, आप का क़र्ज ज्यादा चढ़ गया है। इस गाँव में आप की जो जमीन-जायदाद है, वह गिरवी रखकर आप जितने रुपये चाहते हैं, ले जा सकते हैं।"

"गिरवी रखना क्यों? वह सारी जमीन मैं तुम्हें बेच देता हूँ। कागज़ लिखवाकर गवाहों को साथ ले तुम मेरे गाँव आ जाओ। इस वक़्त तुम जल्दी एक हज़ार रुपये दे दो।" रामचरण ने समझाया।

दुर्गा सहाय ने रामचरण के हाथ एक हज़ार रुपये दे दिये, विक्रय पत्र लिखवाकर गवाहों को साथ ले गंगापुर पहुँचा। तब उसे मालूम हुआ कि रामचरण के मरे एक महीने से ज़्यादा हो गया है।

इस पर दुर्गा सहाय घबराकर दौड़े-दौड़े अपने घर लौट आया। रामचरण से उसने जो कागज़ लिखवाये थे, उन्हें जल्दी-जल्दी निकालकर देखा; पर आश्चर्य की बात यह थी कि उन कागजों पर रामचरण के दस्तखत गायब थे।

उस दिन रात को रामचरण फिर आ धमका। उसे देख कांपते हुए दुर्गा सहाय बोला–"महाशय, रामचरण! कृपया मुझे छोड़ दीजिएगा।"

"यह कैसे संभव होगा? तुमने जो धन अब तक मेरे हाथ दिया, उससे मेरे जुआखोर दोस्तों के परिवारों का नुक़सान अभी तक नहीं भरा। तुमने कई लोगों के घर तबाह किये। मैं एक-एक परिवार को फिर से आबाद करते आ रहा हूँ। मैं तब तक तुम्हें नहीं छोड़ूंगा, जब तक तुम्हारे द्वारा उजाड़े गये परिवार फिर से आबाद न होने पावे।" भूत बने रामचरण ने साफ़ कह दिया।

"मैं सब का धन चुका दूंगा। मेरी बात पर विश्वास कीजिए।" पसीने के मारे तर होते हुए दुर्गा सहाय ने मिन्नत की।

इसके दूसरे ही क्षण रामचरण अदृश्य हो गया।

पुत्र कौन है?

गुरुनाथ के कोई संतान न थी। अचानक उसकी पत्नी का देहांत हो गया। वह दूसरी शादी करना नहीं चाहता था, न अकेला ही ज़िंदगी काटना चाहता था। इसलिए शिवनाथ नामक एक अनाथ बालक को आश्रय देकर अपने पुत्र की भांति पालने लगा।

यह बात जब गुरुनाथ के छोटे भाई दीनानाथ को मालूम हुई, तब वह अपने बड़े भाई को देखने आया और बोला—"भैया, मैंने सुना है कि तुम किसी अनाथ बालक को पालते हो, मगर वह पराया लड़का कभी भी तुम्हारा निजी पुत्र नहीं हो सकता है न?"

गुरुनाथ ने कोई जवाब नहीं दिया, दीनानाथ चुपचाप अपने गाँव लौट गया।

कई साल बीत गये। एक दिन दीनानाथ अपने बड़े भाई को देखने आया और शिकायत की—"भैया, मेरे निजी पुत्र ने मुझ से झगड़ा करके अपना घर अलग बसाया है, न मालूम तुम्हारे पालतू पुत्र शिवनाथ ने तुम्हारे साथ कैसा दगा दिया है?"

"शिवनाथ ने मुझे अपने पिता की तरह माना, मेरे बीमार पड़ने पर दिन-रात उसने मेरी सेवा की। मेरी अंत्येष्ठि क्रियाएँ कीं, इस वक्त वह मेरी अस्थियों को गंगाजी में मिलाने काशी गया हुआ है।" यों कहकर गुरुनाथ हवा में विलीन हो गया।
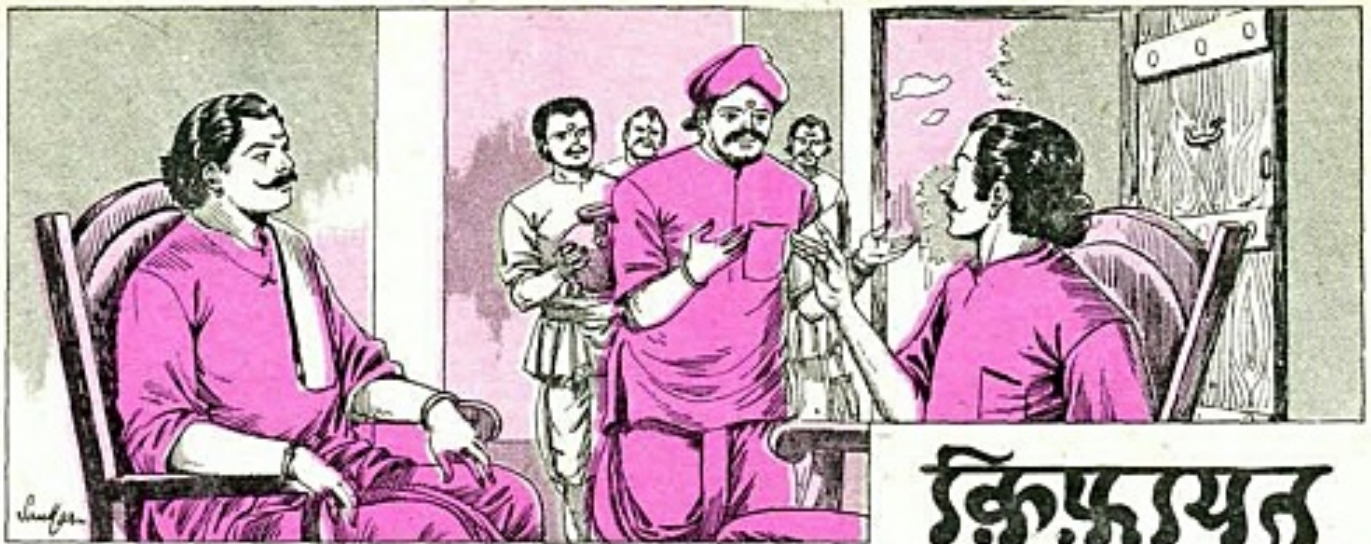
क़िफ़ायत

एक गाँव में गजपति और भूपति नामक दो दोस्त थे। दोनों व्यापार किया करते थे, लेकिन भूपति गजपति से ज्यादा भारी पैमाने पर व्यापार करता था। दोनों के बेटे शहर में ऊँची शिक्षा पाते थे।

एक दिन गजपति ने भूपति से कहा– "दोस्त! हमारी सारी ज़िंदगी गृहस्थी की झंझटों में ही बीतती जा रही है। अगर हमारे मन को थोड़ी शांति मिलनी है, तो थोड़े दिन तक हम पुण्य तीर्थों का सेवन करे तो क्या ही अच्छा होगा?"

भूपति ने संकोच करते हुए कहा– "इसके वास्ते तो शायद काफी रुपये खर्च करने पड़ेंगे न?"

"ऐसे कार्यों के लिए ख़र्च करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए। हम दोनों के खर्च के लिए आवश्यक धन मेरे पास है। तुम भी तीर्थाटन के लिए तैयार हो जाओ।" गजपति ने भूपति को समझाया।

दोनों गजपति का धन ख़र्च करके तीर्थाटन समाप्त कर घर लौट आये। उस वक़्त गाँववालों ने शिवजी के लिए एक मंदिर बनाने का निश्चय किया। चन्दा वसूल करने भूपति के घर पहुँचे। गजपति भी भूपति के पास बैठा हुआ था।

भूपति ने चन्दा वसूल करनेवालों से कहा–"भाइयो, फिलहाल मेरे हाथ खाली हैं। आप लोग सारे गाँववालों से चन्दा वसूल करके तब कृपया मेरे पास आ जाइये।"

इस पर उन लोगों ने गजपति की ओर मुड़कर पूछा–"आप भी तो कृपया इस पुण्य कार्य में थोड़ा हाथ बंटाइयेगा।"

"हाँ, भाइयो, यह बात मुझे पहले ही मालूम हो गई है। मैं अपना चन्दा सौ

विश्वेश्वर प्रसाद

रुपये अपनी पत्नी के हाथ दे आया हूँ। कृपया आप लोग मेरे घर जाकर ले लीजिएगा।'' गजपति ने कहा।

इसके थोड़े दिन बाद गजपति किसी काम से शहर गया। अपने बच्चों के साथ भूपति के बच्चों का भी कुशल-क्षेम पूछा।

भूपति के बड़े बेटे ने गजपति से कहा–''चाचाजी, न मालूम क्यों मेरे पिताजी ने इधर दो महीनों से हमें रुपये नहीं भेजा। अगर हम स्कूल फीस जल्दी नहीं चुकायेंगे तो हमारे नाम काट देंगे। कृपया मेरे पिताजी से यह बात कहियेगा।''

यह बात सुनने पर गजपति को बड़ा दुख हुआ। उसने अपने रास्ते के खर्च के लिए आवश्यक रुपये रखकर बाक़ी सारे रुपये भूपति के बेटे के हाथ देकर समझाया–''बेटे, तुम फिलहाल ये रुपये रख लो। घर पहुँचते ही मैं तुम्हारी बातें तुम्हारे पिता को समझाकर उचित प्रबंध करूँगा।''

गजपति ने घर लौटते ही भूपति के घर जाकर उसे डांटा–''भाई साहब, तुम इतने भारी पैमाने पर व्यापार करते हो? वक़्त पर तुम बच्चों को रुपये न भेजोगे तो उन्हें कैसी तक़लीफ़ होती है? क्या इस बारे में तुमने कभी सोचा भी है?''

इस पर भूपति ने अपनी असहायता प्रकट करते हुए कहा–''दोस्त, तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ? यह बात सही है कि मैं भारी पैमाने पर व्यापार करता हूँ। मगर ऐन मौक़े पर मेरे हाथ में एक

कौड़ी भी नहीं बची रहती। कल मैं बच्चों को रुपये भेजना चाहता हूँ; मगर सुनो, गजपति, मेरे मन में कुछ दिनों से एक संदेह सता रहा है। मैं भारी पैमाने पर व्यापार करता हूँ, लेकिन वक़्त पर मेरे हाथ में एक भी कौड़ी नहीं होती। तुम छोटा-सा व्यापार करते हो, फिर भी तुम्हारे हाथ में हमेशा रुपये होते हैं। यह कैसे संभव है? या तो तुम्हारे पास पर्याप्त पूँजी होनी चाहिए, या तुम्हें गड़ा हुआ ख़जाना हाथ लग गया है। यह रहस्य मुझ को भी बतला दो न?"

इस पर गजपति ने हँसकर उत्तर दिया–"तुम मेरे घर चलो, अपना रहस्य दिखला देता हूँ।"

इसके बाद गजपति ने भूपति को अपने घर ले जाकर पूजागृह में स्थित चार-पाँच हुंडियाँ दिखाईं। भूपति ने आश्चर्य में आकर पूछा–"ये सब क्या हैं?"

"ये ही मेरी असली पूँजी और गड़ा हुआ ख़जाना हैं। मेरा वास्तविक रहस्य क़िफ़ायत करना है। मैं और मेरी पत्नी जहाँ तक हो सके, क़िफ़ायती करते हैं। रोज जो पैसे बच जाते हैं, उन्हें इन हुंडियों में डाल देते हैं। इनमें से एक हुंडी देवता के कार्यों के लिए है, एक पर्व-त्योहार के खर्च के लिए है और एक शादी-ब्याह आदि ख़र्च के लिए। जब हमने तीर्थाटन करने का विचार किया, तब मैंने देवता-कार्यवाली हुंडी को खोलकर देखा, उसमें काफी रुपये जमा हो गये थे। उसी धन से हम दोनों आराम से पुण्य तीर्थों का सेवन कर लौटे।" इन शब्दों के साथ गजपति ने अपनी क़िफ़ायती का रहस्य खोल दिया।

ये बात सुनकर भूपति बोला–"अबे, तुमने मुझे आज तक यह तरीक़ा क्यों नहीं बताया? मैं भी ऐसा ही करके वक़्त पर रुपयों की तंगी से बच जाता। आज से ही सही मैं तुम्हारी क़िफ़ायती के तरीक़े का अनुकरण करूँगा। आइंदा मुझे भी वक़्त पर कोई तक़लीफ़ न होगी।"

चुनाव

एक धनवान की पुत्री विवाह के योग्य हो गई। उसके साथ विवाह करने के लिए तीन रिश्ते आये। उन युवकों में से एक राजा की सेना में बड़ा अधिकारी था, दूसरा बड़ा व्यापारी था और तीसरा कविता और चित्र कला में प्रसिद्ध कलाकार था।

पिता ने अपनी कन्या से पूछा--"इन तीनों में से तुम जिस युवक को पसंद करती हो, मैं उसी के साथ तुम्हारा विवाह करूँगा।"

कन्या ने झट बताया--"मैं कलाकार के साथ विवाह करूँगी।"

पिता ने फिर पूछा--"राजा के यहाँ ऊँचे पद पर रहनेवाले तथा काफी संपत्ति रखनेवाले दोनों युवकों को छोड़ तुमने कलाकार का चुनाव क्यों किया?"

"सैनिक अधिकारी का ओहदा तब तक है, जब तक शरीर में शक्ति है। व्यापार में करोड़ों रुपये कमानेवाले का अंदाज कभी गलत निकलता है तो पल भर में वह भिखारी बन सकता है, लेकिन कलाकार का स्तर अनुभव के साथ बढ़ता है, पर घटता नहीं। वह ज़िंदगी भर उच्च दशा में ही होता है।" बेटी ने जवाब दिया।
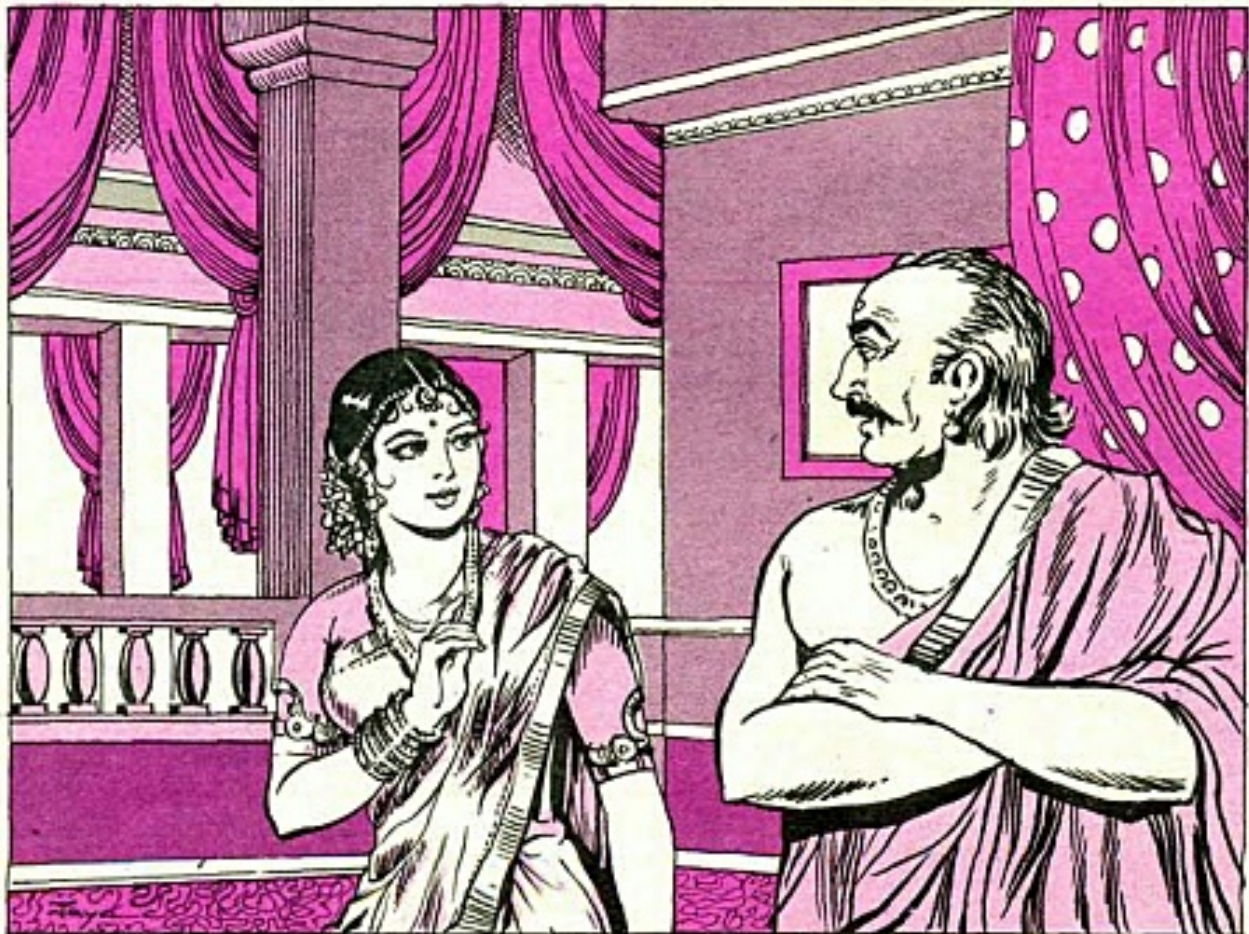
गोदान

बात बहुत पुरानी है । चन्द्रनगर में एक पटवारी रहा करता था । उसके यहाँ सैकड़ों एकड़ जमीन और असंख्य मवेशी थे । फिर भी वह एक नंबर का कंजूस था । कौड़ी भी खर्च करना होता तो तड़प उठता था ।

एक दिन पटवारी की एक गाय किसी बिमारी का शिकार हो गई । उसका पेट फूल गया और वह ठीक से सांस भी ले न पाती थी । पटवारी के मन में गाय के मर जाने की चिंता के साथ यह फ़िक्र ज़्यादा सताने लगी कि उसकी लाश को गाँव के बाहर पहुँचा देने में कम से कम दो रुपये ख़र्च हो जायेंगे ।

पटवारी ने यह बात अपनी पत्नी को बताई । कंजूसी में वह अपने पति से कहीं आगे थी । उसने सलाह दी—"मरनेवाली गाय को हम किसी हालत में ज़िंदा नहीं रख सकते, लेकिन यह उपाय कीजिए कि ऊपर से ख़र्च करना न पड़े ।"

"मैं भी यही बात सोच रहा हूँ ।" पटवारी ने जवाब दिया ।

उसी दिन एक ब्राह्मण याचक उधर से आ निकला । वह किसी दूसरे गाँव का था । उसे देखते ही पटवारी के मन में एक बढ़िया उपाय सूझा । बोला—"विप्रवर! तुम वक़्त पर आ गये । मैं तुम्हारे ही पास खबर भेजना चाहता था ।"

"बात क्या है?" ब्राह्मण ने पूछा ।

"मैं कई दिन पहले बीमार पड़ गया । उस समय मैंने गोदान करने का अपने मन में निश्चय किया । यह संकल्प आज तक पूरा हो न पाया । आज तुम दिखाई दिये । तुम बाल-बच्चोंवाले हो । तुम्हें मैं गोदान देता हूँ । मजे से अपने घर ले जाओ ।" पटवारी ने जवाब दिया ।

२५ साल पूर्व चन्दामामा की कहानी

याचक ब्राह्मण मारे ख़ुशी के उछल पड़ा। उसके कई बच्चे थे। सबको दूध देते बनता न था। उसने सुन रखा था कि पटवारी एक नंबर का कंजूस है। इस ख्याल से उस ब्राह्मण ने कभी पटवारी से कुछ याचना नहीं की थी। लेकिन आज पता चला कि यह तो एक अच्छा दानी जैसे लग रहा है। यों विचार कर ब्राह्मण ने विनयपूर्वक कहा–"आप दान करना चाहे तो मैं थोड़े ही लेने से मना करता हूँ? लेकिन आज की तिथि अष्टमी है। यह दिन मंगलदायक नहीं, परसों दशमी के दिन में आपसे दान ले लूँगा।"

"नहीं, आप को आज ही दान लेना होगा। मुझे आज का काम कल पर टालना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। गोदान लेने के लिए भी कहीं तिथि, नक्षत्र और मुहूर्त देखे जाते हैं?" पटवारी ने कहा।

ब्राह्मण ने सोचा कि आज दान लेने से मना करने पर शायद पटवारी किसी और ब्राह्मण को दान दे। यों विचार कर वह गोदान लेने को तैयार हो गया।

इसके बाद वे दोनों पटवारी के मवेशीखाने में पहुँचे। अब-तब में मौत की घड़ियाँ गिनानेवाली गाय को दिखाकर पटवारी बोला–"लो, यही गाय तुम्हें दान देता हूँ; लेते जाओ।"

तब जाकर याचक ब्राह्मण को पटवारी की दुर्बुद्धि का पता चला कि उस गाय के ज़िंदा रहने की आशा छोड़ने के बाद ही
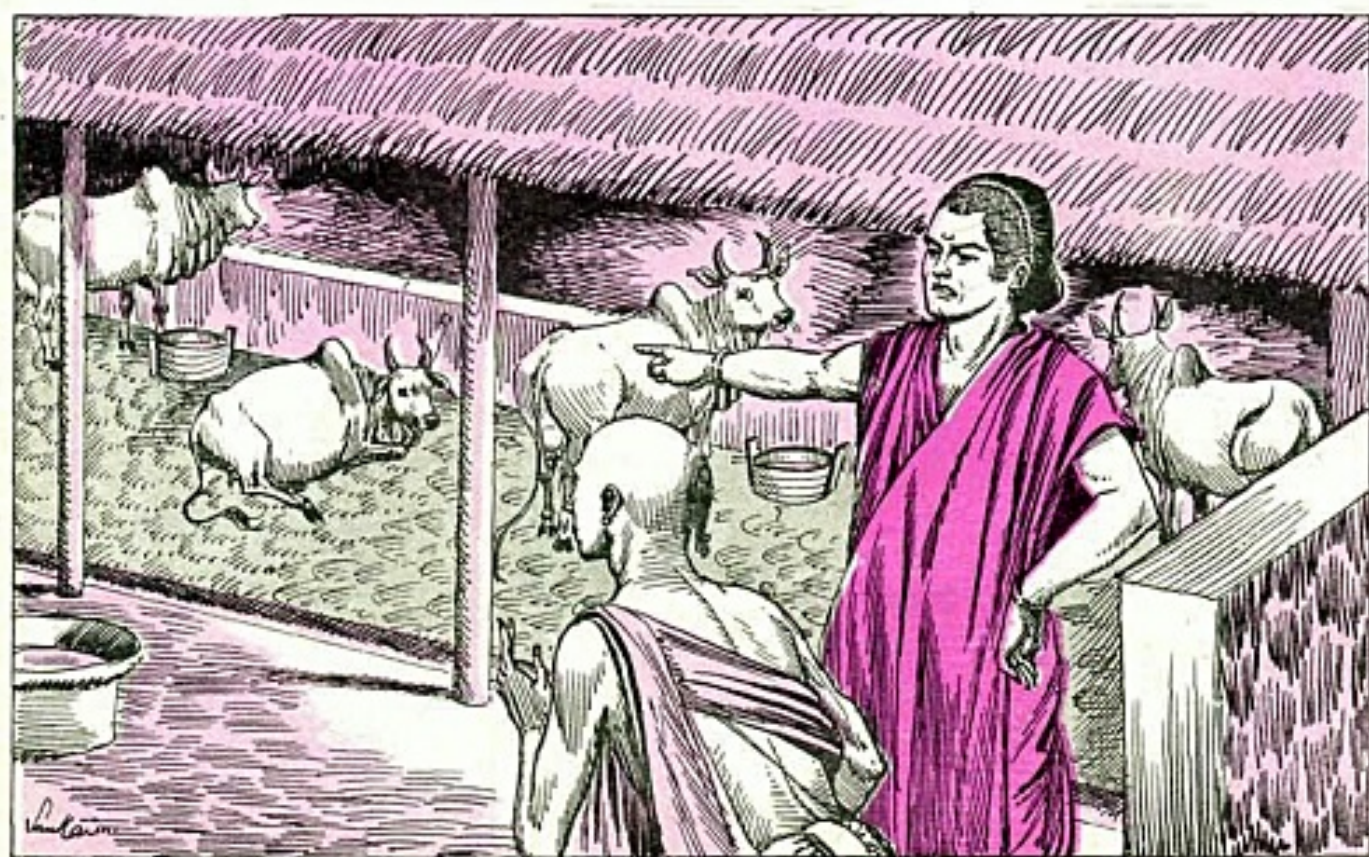
पटवारी ने उसे दान देने का निश्चय किया है; वरना कौड़ी के पीछे जान देनेवाले पटवारी का दान देना कैसे? इसीलिए शायद उसने आज ही दान लेने की जल्दी मचाई है।

फिर भी याचक ने संकोचपूर्ण शब्दों में पूछा—"यह गाय तो बीमार मालूम होती है?"

पटवारी ने झल्लाकर कहा—"मैंने यह थोड़े ही कहा था कि यह गाय स्वस्थ है? मैंने इसी गाय को दान देना चाहा। चाहे यह बीमार हो या मर जाये, यह गाय तुम्हारी ही है। मैंने इसे तुम्हें दान दे दिया है। अब इसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं बल्कि तुम्हारी है।"

"आपकी मर्जी, और मेरी क़िस्मत। किसकी क़िस्मत के कौन कर्ता होते हैं? मैं अपनी गाय ले जाता हूँ। थोड़ी देर रुक जाइयेगा।" यों कहकर याचक ब्राह्मण पिछवाड़े में गया और किसी जड़ी-बूटी की खोज करने लगा।

उस याचक का पिता एक नामी पशु वैद्य था। इस कारण वह भी कुछ जड़ी-बूटियों के गुणों का ज्ञान रखता था। उसने थोड़ी ही देर में एक बूटी खोज निकाली, उसके पत्ते तोड़ लाकर उनका रस गाय की नाकों में निछोड़ दिया। दूसरे ही क्षण गाय छींक उठी। उसके गले से कफ निकल पड़ा।

फिर क्या था, गाय उठ खड़ी हो गई। पटवारी को लगा कि उसका कलेजा फट गया है। वह यह सोचकर चिंता करने लगा कि एकाध रुपया खर्च करके गाय का इलाज करा देता तो गाय बच जाती।

ब्राह्मण खुशी के साथ पटवारी से विदा लेकर गाय को हांककर ले गया।

इसके बाद पटवारी ने घर पहुँच कर छाती पीटते हुए अपनी पत्नी से कहा—"ओह, हमने नाहक़ बढ़िया गाय को याचक ब्राह्मण के हवाले कर दिया है।" फिर दोनों बड़ी देर तक सिसकियाँ लेते हुए रोते रहे।

किसी जमाने में अरुण नामक एक सूर्य वंशी राजा थे। उनके पुत्र का नाम सत्यव्रत था, लेकिन उसका चरित्र ठीक न था। एक बार वह विवाह योग्य एक ब्राह्मण कन्या को उठा ले गया। इस पर उसके माता-पिता व रिश्तेदार रोते हुए राजा के पास पहुँचे। उन्हें देखते ही राजा अरुण ने भांप लिया कि उनके पुत्र ने कोई अनुचित कार्य करके उन्हें कष्ट पहुँचाया होगा, तब कहा—"क्या मेरे पुत्र ने जान-बूझकर या अनजान में तुम लोगों को कोई कष्ट पहुँचाया है?"

"जी हाँ, महाराज! विवाह होने योग्य हमारी कन्या को आप के पुत्र उठा ले गये हैं।" सबने एक स्वर में उत्तर दिया।

यह शिकायत सुनकर राजा क्रोध में आ गये और अपने पुत्र को बुलवाकर डांट दिया—"दुष्ट, तुमने अपनी इज्जत ही खो दी। ऐसा दुष्ट कार्य तुमने क्यों किया? क्या तुमने क्षत्रिय का जन्म नहीं लिया? तुम इसी वक़्त इस राज्य को छोड़कर कहीं चले जाओ।"

सत्यव्रत ने बिना झिझक के राजा से पूछा—"मैं कहाँ जाऊँ?"

"तुमने ऐसा कार्य किया जो कुत्ते खानेवाले भी नहीं करते। इसलिए चण्डालों के पास चले जाओ। तुम्हारे इस अपयश को मैं सह नहीं सकता। तुम्हारी वजह से हमारा वंश कलंकित हो गया है।" राजा ने कहा।

२४. त्रिशंकु की कहानी

वशिष्ठ ने राजा को उकसाया। इस पर सत्यव्रत नाराज़ हो धनुष-बाण लेकर जंगल में चला गया और जंगलियों के बीच अपने दिन काटने लगा।

अपने पुत्र को निकालने के बाद राजा अरुण पुत्रों की संतान के वास्ते तपस्या करने के लिए फिर जंगल में चले गये।

उसी समय इन्द्र ने अरुण के राज्य में वर्षा के होने से रोक दिया, क्योंकि उनकी दृष्टि में उस राज्य में अधर्म फैल गया है।

उन्हीं दिनों में विश्वामित्र अपनी पत्नी और पुत्रों को छोड़कर तपस्या करने के लिए कौशिकी नदी के तट पर पहुँचे। इस बीच अकाल पड़ने से विश्वामित्र के पुत्र भूख के मारे तड़पते हुए रोने लगे—"माँ, हमें खाना खिलाओ।" इस पर विश्वामित्र की पत्नी बहुत दुखी हुई। उसके पास एक कौड़ी भी न थी। उसका पति तो उन्हें खाली हाथ छोड़ तपस्या करने गया है। राजा से याचना करना चाहे तो वे भी राज्य में नहीं हैं। वे संतान के वास्ते कहीं बैठकर तपस्या कर रहे हैं। एक अनाथ बनी औरत अपने बच्चों की भूख कैसे मिटा सकती है?

आख़िर विश्वामित्र की पत्नी ने सोचा—"सब को एक साथ भूख से तड़पकर मरने के बदले दिल को पत्थर बनाकर एक लड़के को बेच दे तो थोड़ा धन प्राप्त होगा, जिससे कुछ समय तक बचे हुए लोगों के प्राण तो बच जायेंगे। मैं क्या करूँ? किसी भी माता के सामने ऐसी मुसीबत न आई होगी।"

यों सोचकर विश्वामित्र की पत्नी ने अपने मंझले पुत्र के गले में दाभों का रस्सा बांध दिया और उसे बिक्री के पशु की भांति घर से लेकर निकल पड़ी। उसका आंचल पकड़कर खींचते हुए बाक़ी पुत्र उसके पीछे पड़ गये—"माँ तुम कहाँ जा रही हो?"

उस दृश्य को सत्यव्रत ने देख लिया, उसने विश्वामित्र की पत्नी से पूछा—

"हे माई, तुम इस रोनेवाले बच्चे के गले में रस्सा बांधकर कहाँ ले जा रही हो? आखिर क्या हुआ? तुम कौन हो?"

"बेटा, विश्वामित्र नामक एक महा पुरुष मुझे और इन बच्चों को छोड़कर तपस्या करने गये हैं। मैं उस महात्मा की पत्नी हूँ। बच्चों का पालन-पोषण करना है न? इसीलिए मैं इस लड़के को बेचने ले जा रही हूँ।" विश्वामित्र की पत्नी ने उत्तर दिया।

"छीः, छीः, यह कैसा अनर्थ है! माई, तुम अपने आश्रम को लौट जाओ। मैं रोज तुम्हारे बच्चों के वास्ते खाना लाकर पोटली बांधकर तुम्हारे आश्रम के एक पेड़ पर रख दूंगा। मैं अपने वचन का ज़रूर पालन करूँगा, तुम विश्वास रखो। थोड़े समय बाद तुम्हारे पति ज़रूर लौट आयेंगे।" सत्यव्रत ने समझाया।

ये बातें सुन विश्वामित्र की पत्नी बड़ी खुश हुई और अपने बच्चों के साथ आश्रम को लौट गई। उसने अपने पुत्र के गले पर बंधन डाल दिया था, इस कारण उसका नाम गालव पड़ा।

सत्यव्रत अपने वचन के मुताबिक़ रोज हिरण, सुअर, भैंस और खरगोशों को मारकर ले आता और उनका मांस एक पोटली में बंद कर आश्रम के एक पेड़ पर बांध देता। उस मांस से अपने बच्चों की भूख मिटाकर विश्वामित्र की पत्नी अपने दिन काट देती थी।
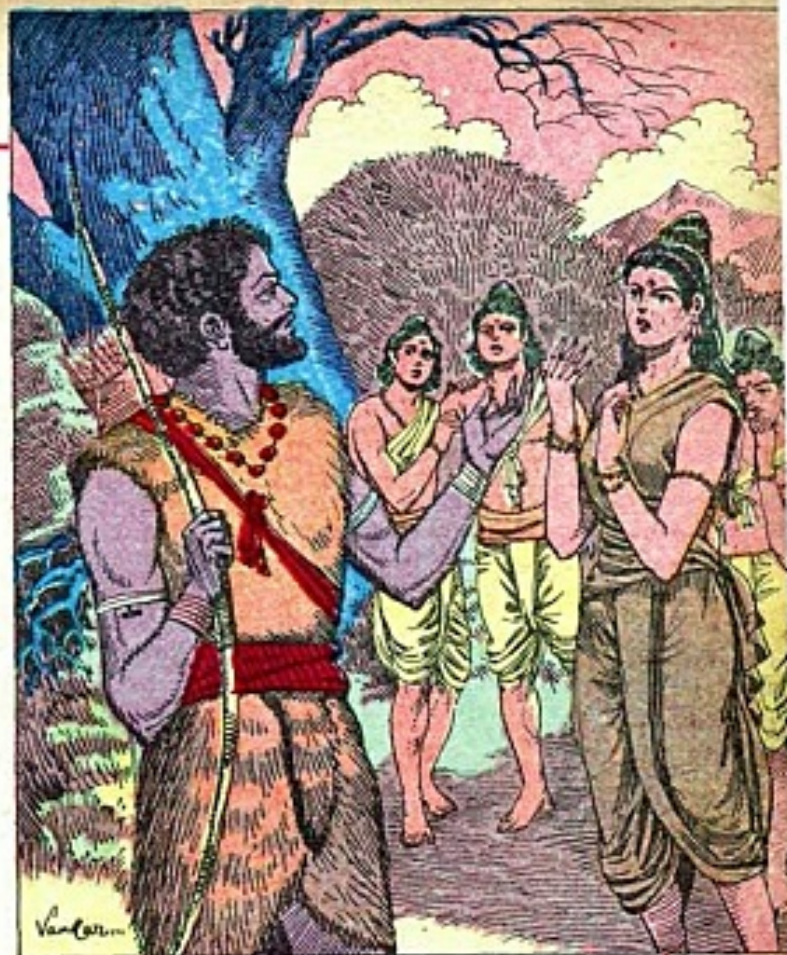
राजा अरुण संतान के वास्ते जब तपस्या करने चले गये, तब से वशिष्ठ अयोध्या में रहते राजमहल के व्यवहार देखने लगे थे।

एक दिन उधर सत्यव्रत को शिकार खेलने के लिए कोई जानवर नहीं मिला। पर राज नगर में वशिष्ठ की होम धेनु दिखाई दी। सत्यव्रत पहले ही वशिष्ठ से नाराज़ था, उसने वशिष्ठ की गाय को मार डाला। उसका थोड़ा मांस खाकर बाक़ी मांस पोटली में बंद कर विश्वामित्र

के आश्रम के पेड़ पर रख दिया। विश्वामित्र की पत्नी व बच्चों को मालूम न था कि वह मांस गाय का है, इसलिए उन लोगों ने खुशी से खा डाला।

वशिष्ठ को मालूम हो गया कि सत्यव्रत ने उसकी गाय को मार डाला है। इस पर वशिष्ठ ने सत्यव्रत को पकड़कर शाप दे दिया–"अरे दुष्ट! तुम को त्रिशंकु कहा जा सकता है। क्योंकि तुमने एक बार एक ब्राह्मण बालिका का अपहरण किया, इसके बाद तुम अपने पिता के द्वारा वहिष्कार किये गये, अब तुमने अकारण ही गाय का वध किया। इन अपराधों की वजह से तुम आज से त्रिशंकु पुकारे जाओगे और सब को पिशाच की आकृति में दिखाई देते रहोगे।"

उस दिन से सत्यव्रत त्रिशंकु हो, पिशाच के रूप में घूमते एक मुनि कुमार का उपदेश पाकर देवी के बारे में तपस्या करने लगा। उसने थोड़े दिन तक नवाक्षरी मंत्र का जाप किया, ब्राह्मणों के पास जाकर बोला–"महाशयो, इस वक़्त मुझे एक होम करना है, आप लोग ऋत्विक बनकर मेरे द्वारा होम करवाकर मुझे कृतार्थ कीजिये। मेरा नाम सत्यव्रत है।"

इस पर ब्राह्मणों ने उसकी निंदा की–"तुम्हारे कुल गुरु ने तुम को पिशाच बन जाने का शाप दे दिया है। ऐसी हालत में तुम वैदिक कर्म कैसे कर सकोगे?"

इस पर सत्यव्रत के मन में ज़िंदगी के प्रति विरक्ति पैदा हो गई। उसके पिता ने उसे राज्य से वंचित किया। कुल गुरु ने उसे शाप दे दिया, वह अब ऐसी स्थिति में है कि वह कोई भी काम नहीं कर सकता; फिर उसके जीने से फ़ायदा ही क्या है?

यों विचार कर त्रिशंकु ने सूखी लकड़ियों से एक चिता बनाई। उसमें भस्म होने के ख्याल से स्नान करके जगज्जननी का स्मरण करने लगा। तब आकाश में देवी ने प्रत्यक्ष होकर कहा–"तुम जल्दबाजी में

मत आओ, तुम्हारे पिता बूढ़े हो गये हैं। वह तुम्हें राज्य सौंपकर निश्चिंत हो तपस्या करने जा रहे हैं। मेरे प्रभाव से तुम्हारा राज्याभिषेक करने के लिए कल तुम्हारे पिता मंत्रियों को भेज देंगे।" यों कहकर देवी अदृश्य हो गईं।

इस पर त्रिशंकु ने आत्म-हत्या का प्रयत्न छोड़ दिया। इसी समय नारद ने राजा अरुण के पास जाकर सूचना दी—"राजन, तुम्हारा पुत्र जीवन से विरक्त हो आत्महत्या करने जा रहा है।"

यह समाचार सुनकर राजा बड़े दुखी हुए, अपने मंत्रियों को बुलवाकर आदेश दिया—"मेरा पुत्र मेरे आदेश पर जंगल में चला गया है। उसे लिवा लाकर राजा बना दो। मैं कहीं जाकर तपस्या करूँगा।"

मंत्रियों ने त्रिशंकु को लाकर राजा अरुण को दिखाया। त्रिशंकु का सिर जटाओं से भरा था। उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ थीं। इस पर राजा अरुण पछताने लगे—'जिसे राज्य करना चाहिए था, वह इस तरह बन गया है। इसका कारण मैं हूँ।' फिर अपने पुत्र से राजा ने गले लगाया, उसे राजनीति समझाई। उसका राज्याभिषेक करके राजा अपनी पत्नी के साथ तपस्या करने गये। अंबा का ध्यान करने के कारण

त्रिशंकु पर वशिष्ठ का शाप भी काम न कर पाया। वह एक और इंद्र के समान द्युतिमान हो राज्य करने लगा।

त्रिशंकु ने राज्य शासन के साथ कई यज्ञ किये और अच्छा नाम कमाया। उसके हरिश्चन्द्र नामक एक पुत्र हुआ। जब हरिश्चन्द्र युक्त वयस्क हुआ तब त्रिशंकु ने निश्चय कर लिया कि अपने पुत्र का राज्याभिषेक करके वह शरीर सहित स्वर्ग जावे।

अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए त्रिशंकु वशिष्ठ के आश्रम में गया। उस महामुनि को प्रणाम करके बोला—"महात्मा, मैं इस शरीर के साथ स्वर्ग के सुखों को

भोगना चाहता हूं। अप्सराओं के साथ टहलते, नंदनवन में विहार करते, गंधर्व-गान सुनने की कामना करता हूँ। इसके योग्य कोई यज्ञ हो तो कृपया बता दीजिए।"

"राजन, मानव मात्र को स्वर्ग में निवास करने की संभावना नहीं है। यज्ञ कर्ता मरने पर स्वर्ग में ज़रूर जाते हैं, पर तुम्हारी कामना पूरी होने की नहीं है। यज्ञ करने पर जो शरीर प्राप्त होता है, उसके द्वारा अप्सराओं के साथ सुख भोग सकते हैं। पर शरीर सहित तुम्हें स्वर्ग में भेजने की शक्ति मैं नहीं रखता।" वशिष्ठ ने अपने पूर्व क्रोध को भूले बिना यों उत्तर दिया।

इस पर त्रिशंकु ने कहा–"अच्छी बात है, अगर आप ऐसा अहंकार करते हैं तो मैं किसी और पुरोहित के द्वारा यज्ञ कराऊँगा।"

यह बात सुन वशिष्ठ क्रोध में आया और शाप दे दिया–"अरे दुष्ट, तुम मुझे क्रोध करने को विवश करते हो? तुम जैसे गोबध करके, ब्राह्मण कन्या का अपहरण करनेवाले को दूसरा भी शरीर धारण क्यों न करो, पर तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति न होगी। तुम फिर से चण्डाल बन जाओ।"

इसके दूसरे ही क्षण त्रिशंकु को चण्डाल का रूप प्राप्त हुआ। इस रूप को लेकर त्रिशंकु ने राज महल को लौटना नहीं चाहा। पत्नी चाहे जैसी भी पतिव्रता क्यों न हो, चण्डाल के रूप में परिवर्तित पति को स्वीकार न करेगी। मंत्री व रिश्तेदार भी उनके समीप आने न देंगे। इस तरह जीने के बदले मरना कहीं अच्छा है। आग या पानी के द्वारा आत्महत्या कर लेने पर अगले जन्म में भी दुख पीछा करेगा। इसलिए इस देह के रहते चन्डाल के रूप में ही जीवन बिताकर अपनी करनी का फल भोगना अच्छा होगा। यों विचार कर त्रिशंकु गंगा के तट पर पहुँचकर वहां के एक जंगल में अपने दिन बिताने लगा।

अपने पिता की दुर्गति का हाल राजा हरिश्चन्द्र को मालूम हुआ। उसने गंगा के तट पर अपने मंत्रियों को भेजा। मंत्रियों ने त्रिशंकु से मिलकर कहा—"महात्मा, आप के पुत्र ने आप को लिवा ले जाने के लिए हमें भेजा है। आप राजधानी को लौटकर पहले की भांति राज्य शासन कीजिए और वशिष्ठ के साथ किसी तरह से समझौता कर लेना उत्तम होगा।"

इस पर त्रिशंकु ने उत्तर दिया—"मैं इस आकृति के साथ नगर में लौटना नहीं चाहता। तुम लोग राजधानी को लौटकर मेरे पुत्र को समझा दो कि वही राज्य करे।"

मंत्रियों ने लौटकर हरिश्चन्द्र को त्रिशंकु का आदेश सुनाया, तब उसने राज्याभिषेक करके राजशासन करना शुरू किया।

इसके बाद त्रिशंकु जगन्माता का ध्यान करते गंगा के किनारे तपस्या करने लगा।

इस बीच विश्वामित्र अपनी तपस्या पूरा करके अपनी पत्नी और बच्चों का देखने अपने आश्रम को लौट आये।

अकाल की बात विश्वामित्र जानते थे। उस समय उनकी पत्नी और बच्चों का क्या हाल हो गया था, यह बात वह जानते न थे। मगर विश्वामित्र भूख की पीड़ा से परेशान हो एक चण्डाल के घर पहुँचे। खाने की खोज में उसके बर्तन में हाथ रखते ही वे पकड़े गये। उस वक्त विश्वामित्र ने बताया कि वह एक तपस्वी है और भूख की पीड़ा से तड़पते हुए वह चोरी करने के लिए बाध्य हुए हैं, इस प्रकार उन्होंने सच्ची बात बताकर अपने प्राण बचाये।
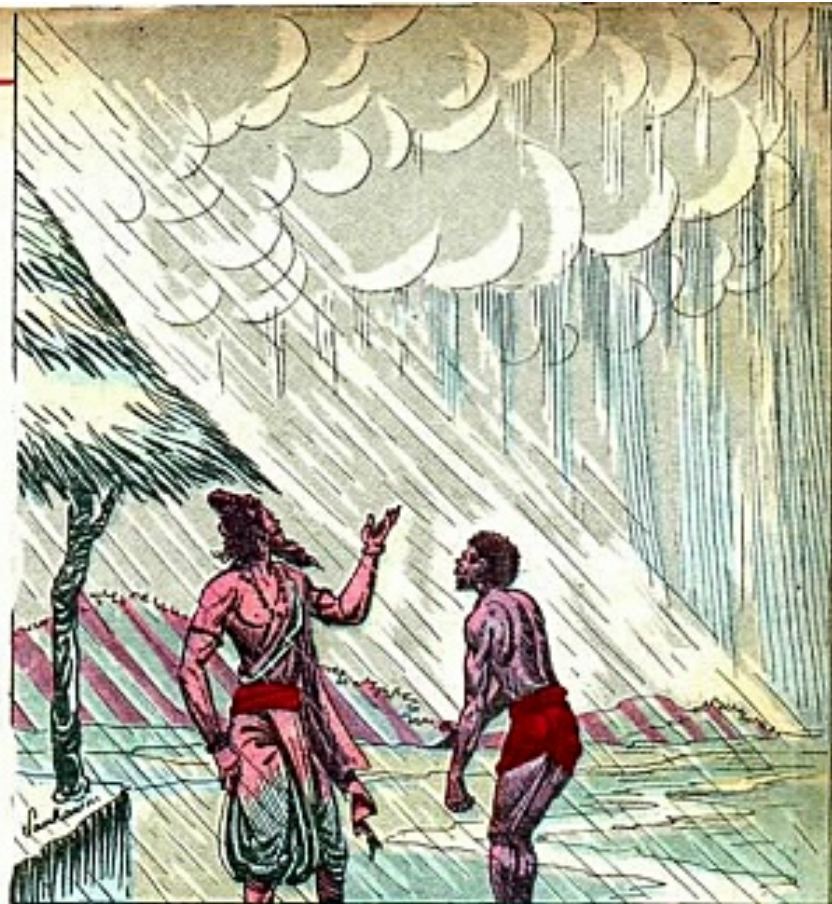
उस समय चन्डाल ने विश्वामित्र से पूछा—"महानुभाव! यह तो कुत्ते का मांस है, आप इसे कैसे खा सकेंगे?"

विश्वामित्र ने जवाब दिया था—"भूख तो धर्म और अधर्म की बात नहीं जानती! अगर मेरे द्वारा कुत्ते का मांस खाना पाप है तो वह पाप वरुण देव का ही होगा।"

विश्वामित्र के मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि भयंकर वर्षा शुरू हुई, तब

विश्वामित्र वहाँ से अपने आश्रम को लौट आये।

विश्वामित्र की पत्नी ने उन्हें समझाया कि अकाल के वक्त त्रिशंकु ने उनकी रक्षा कैसे की? यह भी बताया कि त्रिशंकु ने उन्हीं के वास्ते वशिष्ठ की गाय का वध किया और परिणाम स्वरूप वह शपित हो गया है। इस पर विश्वामित्र त्रिशंकु की खोज में चल पड़े। उससे मिलकर बोले– "राजन, तुमने मेरी पत्नी और बच्चों का बड़ा उपकार किया है। मैं इसके बदले में आप का उपकार करना चाहता हूँ।"

त्रिशंकु ने अपने शरीर के साथ उसे स्वर्ग में भेजने की कामना की। वशिष्ठ का शाप दूर करने के लिए विश्वामित्र ने त्रिशंकु के द्वारा यज्ञ कराना चाहा, लेकिन वशिष्ठ ने मुनियों को यज्ञ में भाग लेने नहीं दिया। इस कारण यज्ञ संपन्न नहीं हो सका।

उस समय विश्वामित्र ने अपनी सारी तपस्या की शक्ति त्रिशंकु को दान करके कहा–"अब तुम स्वर्ग में चले जाओ, तुम को कोई भी रोक नहीं सकता।"

उस तपोशक्ति के बल पर त्रिशंकु पक्षी की तरह उड़ते स्वर्ग की ओर चल पड़ा। चण्डाल की अकृति में एक मानव को स्वर्ग की ओर चले आते देख देवताओं ने यह समाचार इंद्र को सुनाया। इन्द्र ने आकर त्रिशंकु को ढकेलते हुए कहा–"तुम चण्डाल हो! स्वर्ग में कैसे प्रवेश कर सकते हो? नीचे चले जाओ।"

त्रिशंकु पृथ्वी पर गिरते चिल्ला उठा– "महात्मा! मुझे देवता स्वर्ग से ढकेल रहे हैं।"

दूसरे ही क्षण विश्वामित्र ने अपनी तपोशक्ति के बल पर त्रिशंकु को बीच में ही रोक दिया और पृथ्वी पर गिरने से बचाया। अलावा इसके उन्होंने त्रिशंकु के वास्ते एक और स्वर्ग की सृष्टि की। यह बात मालूम होने पर इन्द्र ने विश्वामित्र से निवेदन किया कि वे एक नई सृष्टि न करे, तब त्रिशंकु को नया शरीर देकर अपने साथ सीधे उसे स्वर्ग में ले गये।

दाढ़ीवाला रामसिंह

कमला मंदिर से लौटकर देखती क्या है, उसका पिता गोरखप्रसाद किन्हीं अपरिचितों के साथ बातचीत कर रहा है। गोरखप्रसाद ने उन्हें कमला का परिचय कराया। कमला उन्हें प्रणाम करके घर के भीतर चली गई।

गोरखप्रसाद से जो लोग बातचीत करते थे, वे बाप-बेटे थे। उस युवक को कमला ने अपनी एक सखी की शादी में देख लिया था। वह दूलहे का दोस्त था। उसका नाम रविकांत है। कमला समझ न पाई कि इस वक़्त रविकांत अपने पिता को साथ लेकर उसके घर क्यों आया है?

इतने में गोरखप्रसाद घर के अंदर आया और कमला से बोला—"ये लोग बड़े ही अमीर हैं, सुनते हैं कि उस युवक ने तुम्हें कहीं देखकर पसंद किया है, इसलिए अपने पिता को साथ ले आया है। लेकिन उसका पिता कम से कम दस हज़ार दहेज़ मांग रहा है। हम तो इतनी बड़ी रक़म दे नहीं सकते हैं। इसलिए उन्हें नाश्ता खिलाकर चुपचाप भेज देंगे।"

कमला ने जल्दी-जल्दी नाश्ता बनाकर उन्हें खिलाया। रविकांत के साथ शादी करने में उसे ख़ुशी ही होगी, मगर दस हज़ार दहेज़ कहाँ से लावे?

उधर गोरखप्रसाद ने उन लोगों से साफ़ कह दिया कि वह दस हज़ार दहेज़ नहीं दे सकता, तब बाप-बेटे को विदा करने गली के नुक्कड़ तक पहुँचा।

घर लौटकर गोरखप्रसाद कमला से बोला—"बेटी, जो रिश्ता हमारी खोज करते अपने आप आ गया है, उससे हाथ धो बैठना बेवकूफ़ी होगी! अगर तुम्हें यह रिश्ता पसंद आ गया है, तो मैं उन्हें वचन दूंगा।"

राधेश्याम भार्गव

"मैं हमारे रविकांत का चुनाव देखना चाहता हूँ। दुलहिन कहाँ पर है?" उस बुजुर्ग के लंबी दाढ़ी-मूँछें और जुल्फ़ें थीं। वह अपनी मूँछें संवारते हुए बोला–"मेरा नाम दाढ़ीसिंह है! मैं दूल्हे के लिए पिता जैसा हूँ!"

कमला ने उस बुजुर्ग के चरणों में प्रणाम करके उसका आशीर्वाद पाया। वरपक्ष का बुजुर्ग समझकर गोरखप्रसाद ने उसे चाय और नाश्ते का इंतजाम किया। उसकी बड़ी आवभगत की।

दाढ़ीवाला सीधे जनवासे में पहुँचा, दूल्हे का पिता राजनाथ से कहा–"मैं हमारी कमला का चुनाव देखना चाहता हूँ, दूल्हा कहाँ पर है? मेरा नाम दाढ़ीसिंह है। दुलहिन मेरे लिए बेटी जैसी है!"

राजनाथ ने दाढ़ीसिंह की बड़ी इज्ज़त की, रविकांत को उसका परिचय कराते हुए बोला–"ये तुम्हारे ससुर के बड़े भाई हैं।"

दाढ़ीसिंह दुलहिन के घर और जनवासे का चक्कर लगाता रहा। किसी ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की कि आखिर वह किस पक्ष का रिश्तेदार है!

उस दिन शाम को जनवासे में जब राजनाथ अपने रिश्तेदारों से बात कर रहा था, तब दाढ़ीसिंह वहाँ पर जा

"दहेज कहाँ से लायेंगे बाबूजी?" कमला ने पूछा।

"जैसे-तैसे मैं इसका इंतज़ाम कर लूँगा। तुम्हारा चेहरा ही बता रहा है कि यह रिश्ता तुम्हें पसंद है।" गोरखप्रसाद ने कहा।

इसके बाद गोरखप्रसाद ने वह रिश्ता क़ायम किया, पंद्रह दिनों में शादी का मुहूर्त भी निर्णय किया गया।

शादी के पिछले दिन बारात आ पहुँची। पटवारी के घर पर बारातियों को ठहराया गया।

कमला को सुमंगलियाँ सजा रही थीं, तब वहाँ पर एक बुजुर्ग आ पहुँचा, बोला–

धमका और बोला–"महाशय, थोड़ी देर के लिए बाहर आ सकते हैं? आप से दहेज़ के संबंध में बात करनी है ।"

दहेज़ की बात सुनते ही राजनाथ झट उठकर बाहर चला आया । दाढ़ीसिंह राजनाथ को भीतरी कमरे के अन्दर ले गया ।

"मेरे छोटे भाई ने दहेज़ के रुपये..." बात पूरी हो न पाई थी कि दाढ़ीसिंह को खांसी का दौर आया । उसने खांसते हुए इशारा किया कि उसे पानी चाहिए!

राजनाथ बाहर आया, एक लोटे में पानी लेकर फिर कमरे के भीतर आया ।

दाढ़ीसिंह पानी पीकर बोला–"मेरे छोटे भाई ने यह पूछने के लिए मुझे भेजा है कि दहेज़ की रक़म अभी दे दें?"

"हाँ, हाँ, ले आने को कह दीजिएगा!" राजनाथ ने जवाब दिया ।

दाढ़ीसिंह वहाँ से वधू के घर पहुँचा, अपने रिश्तेदारों के बीच बैठे हुए गोरखप्रसाद से बोला–"सुनिये तो! थोड़ी देर के लिए आप बाहर आ सकते हैं? आप से एक जरूरी बात करनी है ।"

गोरखप्रसाद एक बार चारों ओर घेरे हुए लोगों की तरफ़ नज़र दौड़ाकर दाढ़ीसिंह को भीतरी कमरे में ले गया ।

थोड़ी देर बाद गोरखप्रसाद यह चिल्लाते बाहर आया कि "पीने का
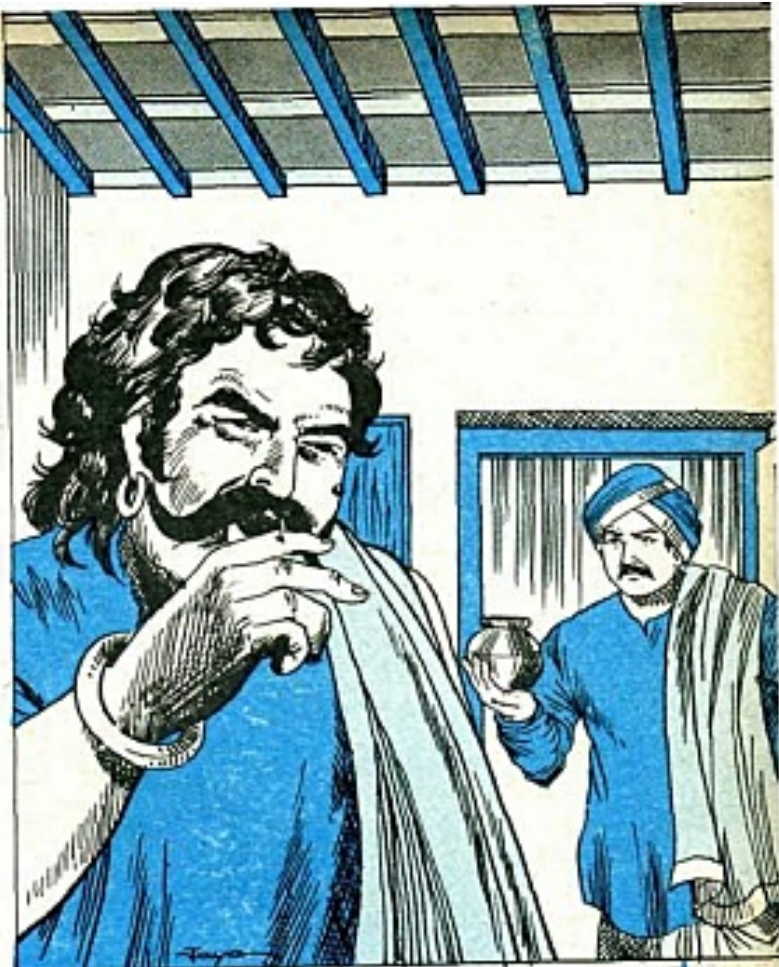
पानी लाओ, दाढ़ीसिंह खांसी के दौर से परेशान हैं; छटपटा रहे हैं ।" फिर पानी लेकर कमरे के अन्दर चला गया ।

थोड़े समय बाद दाढ़ीसिंह सब के देखते कमरे से बाहर आया और वहाँ से चला गया । पांच-दस मिनट बीते होंगे कि कमरे के अन्दर से गोरखप्रसाद की चिल्लाहट सुनाई दी, तब सब लोग कमरे के भीतर गये ।

गोरखप्रसाद एक संदूक़ के सामने बैठकर घबराये हुए कपड़े-लत्ते संदूक़ से निकालकर बाहर फेंक रहा है!

गोरखप्रसाद चीख-चीख़कर कह रहा था–"दहेज़ के रुपये दिखाई नहीं देते!

हज़ार-दो हज़ार नहीं, पूरे दस हज़ार रुपये! हमारे समधी ने अभी रुपये भिजवाने को कहला भेजा है। दाढ़ीसिंह कह गया है! दाढ़ीसिंह को छोड़ और किसी ने भी इस कमरे के भीतर क़दम नहीं रखा है। खांसी के बहाने मुझे कमरे से बाहर भेजकर सारे रुपये हड़प लिये हैं! वह चोर है! बदमाश है! उसे पकड़ लो! भागो!"

इसी समय उधर से राजनाथ भी चिल्लाते हुए वहाँ पर आ पहुँचा, बोला—"वह दुष्ट दाढ़ीसिंह कहाँ? मेरे पांच हज़ार दिन दहाडे लूट ले गया है। खांसी का बहाना करके मुझे कमरे से बाहर भेजकर रुपये हड़प लिया है।"

"दाढ़ीसिंह ने मेरे दस हज़ार लूट लिये हैं।" गोरखप्रसाद चिल्ला उठा।

तब जाकर यह सवाल उठा कि दाढ़ीसिंह आखिर किस पक्ष का आदमी है? पूछ-ताछ करने पर पता चला कि वह किसी भी पक्ष का आदमी नहीं है। लोगों ने उसकी बड़ी खोज-ख़बर ली, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा।

रविकांत ने अपने पिता को अलग ले जाकर समझाया—"आप से मैंने पहले ही बताया था कि आप नाहक़ दहेज़ की झंझट में न पड़ियेगा, लेकिन आप ने मेरी बात नहीं मानी। अब आप देख रहे हैं कि कैसा टंटा उठ खड़ा है! आप में दहेज़ का लोभ देख वह दाढ़ीवाला दहेज़ का बहाना करके आप को कमरे के अन्दर ले गया और पांच हज़ार हड़पकर भाग गया! अच्छा हुआ कि उसने कपड़ों के नीचे के पच्चीस हज़ार और गहने नहीं देखें! हम तो लोगों की हँसी-मजाक़ के कारण बन गये, अब आप कृपया दहेज़ की बात न उठाइयेगा!"

इतने में कोई चिल्ला उठा कि मुहूर्त का वक़्त हो गया है, तब लोग रविकांत को विवाह वेदी पर ले गये।

शादी बिना रोक-टोक के संपन्न हुई। शादी के दूसरे दिन बराती लोग चार तांगों पर अपने गाँव की ओर चल पड़े।

तांगे में चलते वक़्त कमला ने रविकांत से कहा–"उस दाढ़ीसिंह ने कैसा दगा दिया? मेरे पिताजी के रुपयों के साथ ससुरजी के रुपये भी उड़ा ले गया है! मुझे तो बड़ा दुख हो रहा है!"

रविकांत ने हँसकर कहा–"किसी के भी रुपये चुराये नहीं गये! यह सब नाटक मैंने और तुम्हारे पिता ने मिलकर रचा है! मेरे पिताजी धन को ज़्यादा महत्व देते हैं! उन्होंने साफ़ कह दिया था कि बिना दहेज़ के शादी नामुमकिन है। तुम्हारे पिता जब हमें विदा करते गली के नुक्कड़ तक आ पहुँचे, तब मेरे पिताजी तांगेवाले से मोलभाव करने लगे। मैंने मौक़ा पाकर तुम्हारे पिता को अलग ले जाकर यह उपाय बताया। तुम्हारे पिताजी पहले इसे अमल करने को तैयार न हुए! दाढ़ीसिंह तो मेरे जान-पहचान का आदमी है! उसने अपनी बेटी की शादी के वास्ते मेरे पिताजी से पांच हज़ार रुपये उधार मांगे, मेरे पिता ने नहीं दिया। मैंने इसके पहले ही संदूक़ से गुप्त रूप से पांच हज़ार निकालकर दाढ़ीसिंह को दे दिये थे। दाढ़ीसिंह ने उस पर शक पैदा करने के लिए जान-बूझकर खांसी मोल ली। तुम्हारे पिता के पास आखिर दहेज़ के रुपये ही कहाँ थे? मेरे पिताजी के जब पांच हज़ार खो गये, तब उन्होंने इस बात पर यक़ीन किया कि दहेज़ के रुपये भी चुराये गये हैं!"

"ओह, आप कैसे भेले आदमी हैं! बिना दहेज़ के आप ने मुझ से शादी की, लेकिन दाढ़ीसिंह नाहक़ लोगों की नज़र में चोर बन बैठा है।" कमला ने अपनी चिंता व्यक्त की।

"दाढ़ीसिंह कोई बावरा नहीं, उसका असली नाम रामसिंह है। उसकी दाढ़ी, मूँछें और ज़ुल्फ़ें नकली हैं। वह नाटकों में अभिनय किया करता है, इसलिए उसने अपना स्वर भी बदल लिया है। उसके बेटे को नौकरी मिलने पर वह पाँच हजार वापस देंगे।" रविकांत ने समझाया।
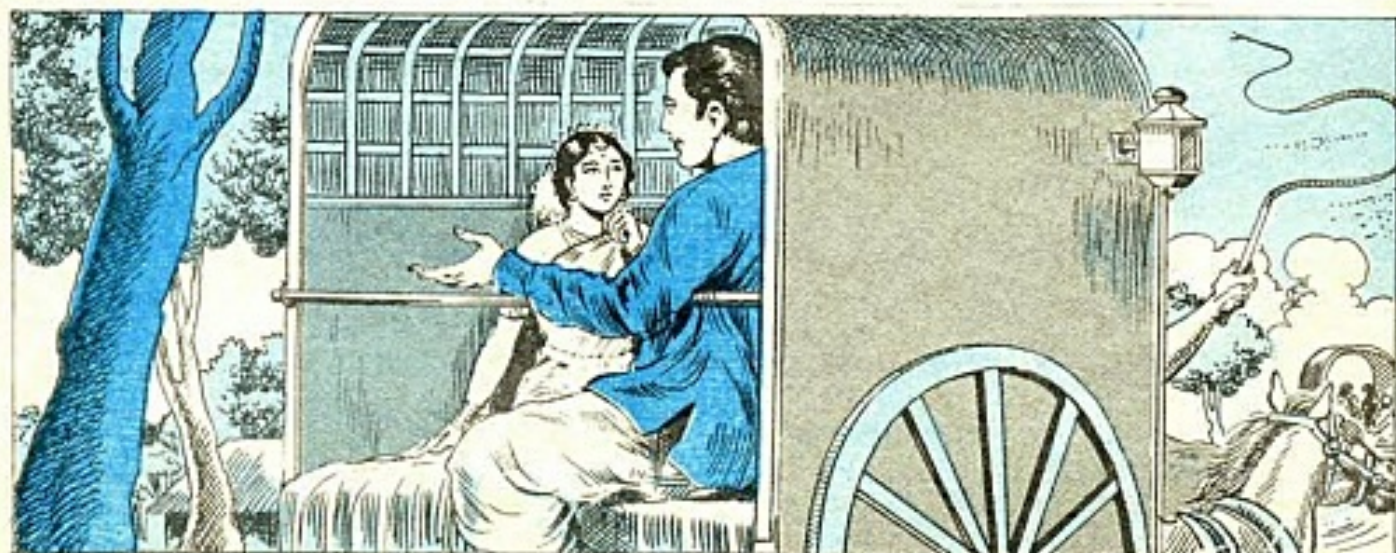
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां दिसंबर १९८० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

★

P. Sundaram — Azmat A. Syed

- ★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।
- ★ अक्तूबर १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।
- ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।
- ★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अगस्त के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : संगीत से हुआ है प्यार !

द्वितीय फोटो : लाल मेरा सिर पर सवार !!

प्रेषक : अरूप रंजन राय, C/o श्री मनिन्द्र चन्द्र राय, १२५/४ लोको कॉलनी, रायपुर।

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

अपनी आँखें बंद करो और जो चाहो माँगो

तुम जो चाहोगे, वो मिलेगा बशर्ते बचत करो. तुम खुद अपने पैसों से साइकिल, खिलौने या गुड़िया, जो चाहो खरीद सकते हो. केनरा बैंक की **बालक्षेम जमा योजना** तुम्हारे लिए ही है.

बालक्षेम के सुंदर से चाबीवाले गुल्लक में तुम पैसे जमा करते जाओ– भर जाने पर केनरा बैंक में जाकर अपने पैसे जमा करा दो. और फिर गुल्लक भरना शुरू कर दो. तुम्हारी रकम बढ़ती ही जायेगी क्योंकि हम उसमें पैसे मिलाते जायेंगे. जल्द ही इतनी रकम जमा हो जायेगी कि तुम मनचाही चीज़ें खरीद सकोगे.

अधिक जानकारी के लिए केनरा बैंक की अपनी नज़दीकी शाखा में चले आओ. हमारी अन्य विशेष योजनाएं हैं : कामधेनु, विद्यानिधि और निरन्तर.

बालक्षेमा जमा योजना

केनरा बैंक

(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

देशभर में 1,200 से भी अधिक शाखाएँ.

maa CB 4 Hin 80

इतनी अच्छी
कि आप अकेले नहीं खा सकते...
कोकोनट कुकिज़, लैक्टोबोनबोन्स,
टॉफीज, कोकोनट क्रन्च और साफ्ट
सैंटर्ड स्वीट्स, पीपरमींट रोल्स,
मिनीपोप्स ।
MORTON
sweets of
distinction.
मॉर्टन कन्फैकशनारी एन्ड मिल्क
प्रोडक्टस फैक्ट्री
(प्रो० अपर गैंजेज सूगर मिल्स लिमिटेड)
पो० मढ़ौरा (जिला सारन) बिहार
CC/M-1/80 HIN

मेरे जन्म दिन पर
एक नया उपहार
यूकोबैंक की
पास बुक
UNITED COM
SAVINGS
PASS
ACCOUN
उपहारों को जुटाएगा यह उपहार
देखो ! यूकोबैंक की पास बुक का
कमाल ।
इस अनूठे उपहार के लिए
माँ को धन्यवाद । और मेरी
छोटी-छोटी बचत को कई
गुना बढ़ा देने के लिए
यूकोबैंक को भी धन्यवाद ।
यूनाइटेड कमर्शियल बैंक
यह मित्रवत् बैंक आपके पास-पड़ोस में ही है ।
UCO/CAS-69/80 HIN
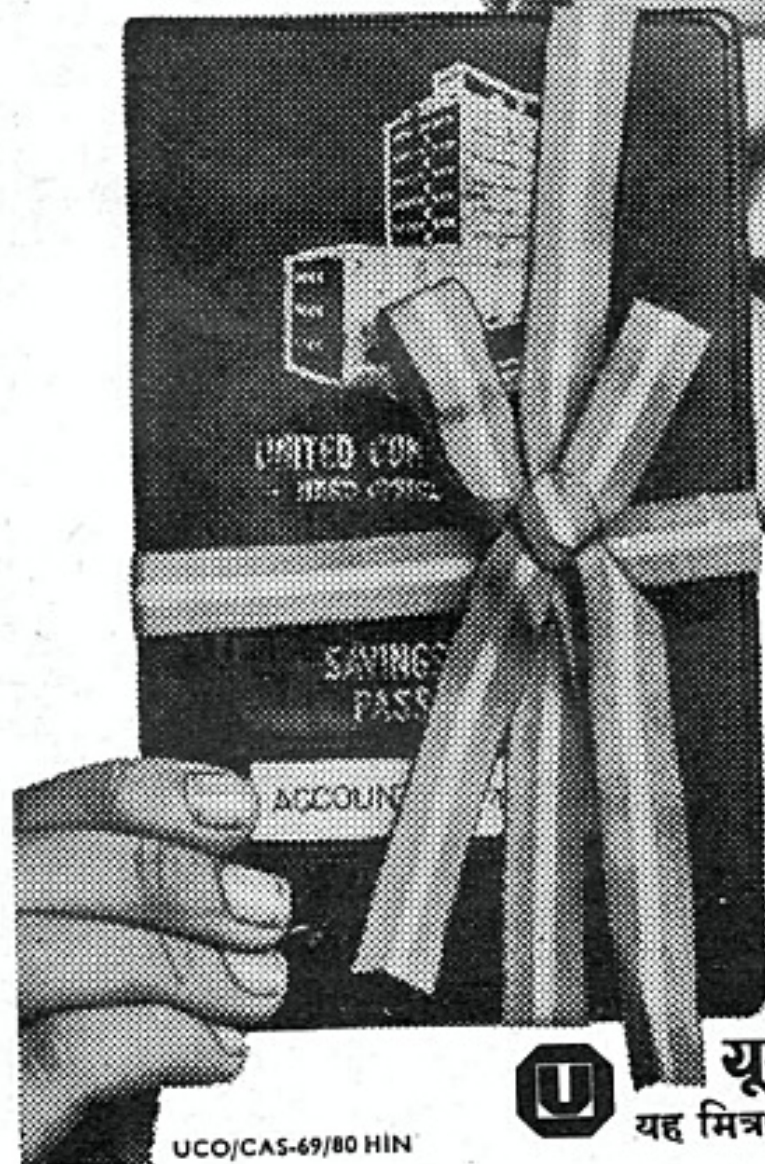
कैम्पा का आरेंज * स्वाद....
पीजिए, मज़ा ऐसा कि याद कीजिए
कैम्पा से ज़िंदगी में मौजबहार, इसमें अब आरेंज* स्वाद की हलचल जगाइए, कैम्पा पीजिए, पिलाइए. मौजमस्ती का रंग, मौजमस्ती का स्वाद—कैम्पा आरेंज* स्वाद. ज़िंदगी की प्यास अधूरी, कैम्पा आरेंज* स्वाद से कीजिए पूरी—इन सभी रंगारंग प्यासे लोगों की तरह...अभी.
*आर्टिफ़िशियल फ्लेवर
Campa
आरेंज स्वाद
OBM/4639
Campa
Campa

रसीली
प्यारी
मज़ेदार

फलों की स्वादवाली
गोलियां

५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अनानास, नींबू,
नारंगी व मोसंबी.

everest/80/PP/310-hn